SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:57, Issue: 01
June - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2026

रु.20/-



अप्पलायगुंटा, श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

25-06-2026 से 03-07-2026 तक

कार्वेटिनगरम्, श्री वेणुगोपालस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2026 जून 05 से 14 तक



05-06-2026 शुक्रवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

06-06-2026 शनिवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

07-06-2026 रविवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

08-06-2026 सोमवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

09-06-2026 मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

10-06-2026 बुधवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुड़वाहन

11-06-2026 गुरुवार
दिन - हनुमन्तवाहन, सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

12-06-2026 शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

13-06-2026 शनिवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

14-06-2026 रविवार
दिन - पालकी उत्सव,
तीर्थवारि, अवभृथ, चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

अप्पलायगुंटा, श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2026 जून 24 से जुलाई 03 तक



24-06-2026 बुधवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

25-06-2026 गुरुवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

26-06-2026 शुक्रवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

27-06-2026 शनिवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

28-06-2026 रविवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

29-06-2026 सोमवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुड़वाहन

30-06-2026 मंगलवार
दिन - हनुमन्तवाहन, सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

01-07-2026 बुधवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

02-07-2026 गुरुवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

03-07-2026 शुक्रवार
दिन - पालकी उत्सव,
तीर्थवारि, अवभृथ, चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण



नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-४०)

इस कर्मयोग में आरम्भ का अर्थात् बीज का नाश नहीं है और उलटा फलरूप दोष भी नहीं है; बल्कि इस कर्मयोग रूप धर्म का थेडा-सा भी साधन जन्म-मृत्यु रूप महान् भय से रक्षा कर लेता है।

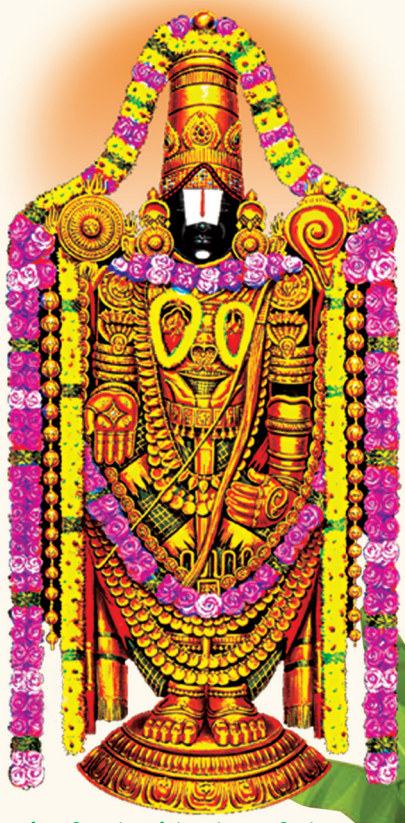


भारमैन वेपमानु पालुवोसि पेंचिनानु
तीरनि चेदेगाक तिय्यनुंडीना ॥भारमैन॥

पायदीसि कुक्कतोक बद्दलु वेट्टि बिगिसि
चायकेंत गट्टिनानु चक्कगुंडीना
कायपु विकारमिदि कलकालमु जेप्पिना
पोयिन पोकलेगाक बुद्धि विनीना ॥भारमैन॥

मुंचिमुंचि नीटिलोन नान बेट्टुकुन्ना
मिंचिन गोड्डुलि नेडु मेत्तनय्यीना
पंच महापातकाल बारिबड्डु चित्तमिदि
दंचि दंचि चेप्पिनानु ताकि वंगीना ॥भारमैन॥

कूरिमितो तेलु देच्चि कोकलोन बेट्टुकुन्ना
सारे सारे कुट्टु गाक चक्कनुंडीना
वेरुलेनि महिमल वेंकटविभुनि कृप
घोरमैन आस मेलुकोरि सोकीना ॥भारमैन॥



कितने भी प्रयत्न करें, इस मन को काबू में लाना, कठिन होता जा रहा है। नीम के पौधे को, पानी के स्थान पर दूध देकर अच्छी तरह पोषण करने पर भी उसके पत्ते तो कडुवे ही होते हैं। कुत्ते की पूँछ को लकडियों से बाँधकर, सीधा करने का यत्न करें, तोभी कुछ लाभ नहीं होता है। उसी तरह अनेकानेक विकारों का आदी होने के कारण बुद्धि हमारी बातों को सुनती ही नहीं है। कुल्हाडे को चाहे कितने ही दिन पानी में भिगोकर रखने पर भी, उसमें कोमलता नहीं आती है। इसी तरह पाप कर्मों की मानव-प्रवृत्ति, कितने भी मार खायें, बदलती नहीं है। बिच्छू को प्यार से पालकर साडी में लिपटकर रखें, तोभी वह अपनी प्रकृति को छोड नहीं पाता है तथा बार-बार डंक मारता ही है। इसी तरह इस पापी मन को, आदि - अंत रहित श्री वेंकटेश की महिमाओं को बार-बार सुनायें, तो भी वह अपने स्वभाव को छोडता नहीं है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी



सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण



♦ 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।

♦ 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ(EMO), भारतीय डाकघर(IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में 'चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति' के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति' पते को भेजना चाहिए।

♦ चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।

♦ अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।

♦ अन्य विवरण केलिए ''प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507'' पते पर संपर्क करें।

♦ सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।





सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-57 जून-2026 अंक-1

विषयसूची

सूर्यपुत्री यमुनानदी के पुष्कर	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	11
कार्वेटिनगर, श्री वेणुगोपाल स्वामीजी	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	15
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	18
श्री पेरियाळ्वार	श्रीमती शिल्पा केशव रांदड़	19
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	22
श्री नाथमुनी स्वामीजी	श्रीमती पूजा गौरव अगर्वाल	25
मीरा का जीवन चित्रण और हिन्दी साहित्य में उनका स्थान	डॉ.टी.पद्मजाराणी	31
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	33
लोकगीतों में मर्यदा पुरुषोत्तम राम	डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी	38
हरिदास परंपरा की भक्तिनों में हरप्पनहळ्ळी हरप्पनहळ्ळी भीमव्वा	डॉ.मैथिली प्र.राव	42
कद्दू के बीज	डॉ.सुमा एस.एस.जोशी	45
जून महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - सच्चा विजेता	श्रीमती प्रेमा	48
चित्रकथा - परमपुरुष के लिए मंगलकामना गाने वाले	श्री के.रामनाथन	50
क्विज - 47		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभय देवेरियों सहित श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामीजी, अप्पलायगुंटा।
चौथा कवर पृष्ठ - नौका विहार करते हुए श्री पद्मावती देवी, तिरुचानूर।

गौरव संपादक
श्री एम.रविचंद्रा, I.A.S.
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.,
P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

पुष्प सेवा करने वाले परम भक्त

अहिंसा प्रथमं पुष्पं, पुष्पं इन्द्रिय निग्रहः। सर्वभूत दया पुष्पं, क्षमा पुष्पं विशेषतः।।

शान्ति पुष्पं, तपः पुष्पं, ध्यान पुष्पं तथैव च। सत्यं अष्टविधं पुष्पं विष्णोः प्रीतिकरं भवेत्।। - अग्नि पुराण

उपरोक्त श्लोक हमें यही उपदेश देता है कि पौधों, बेलों और वृक्षों में खिलने वाले फूलों की तरह ही, अहिंसा, इंद्रिय संयम, समस्त जीवों पर दया, क्षमा, धैर्य, तप, ध्यान और सत्य से न डिगना, ये आठ प्रकार के सद्गुण वे पुष्प हैं जो हमारे प्रभु के हृदय को प्रसन्न करते हैं। श्रीमन्नारायण की पूजा समस्त कल्याणकारी गुणों से युक्त सगुण ब्रह्म के रूप में की जाती है। यद्यपि प्रेम और करुणा जैसे सद्गुण उस परमात्मा के स्वरूप हैं, फिर भी उनका दिव्य और तेजोमय स्वरूप सबसे पहले हम सभी के मन को आकर्षित करता है। श्रीराम के बाण से घायल होकर मृत्यु के निकट पड़े वाली ने भी उन्हें देखकर कहा था, ''अतुलनीय सौंदर्य के स्वामी, जिसका चित्रण चित्रकार भी नहीं कर सकता''। ऐसे परमेश्वर को सुंदर रंगों और सुगंधित फूलों से सजाना और उनकी अर्चना करना प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति और परंपरा का हिस्सा रहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है, ''ऋतुओं में, मैं फूलों के खिलने वाली वसंत ऋतु हूँ,'' जिससे हमें यह ज्ञात होता है कि पुष्प प्रभु को अत्यंत प्रिय हैं।

श्रीमद्भागवत पुराण में उल्लेख है कि श्रीकृष्ण के परम भक्त अक्रूर, कंस की आज्ञा पाकर कृष्ण को ले जाने के लिए गोकुल आए और वहाँ श्रीकृष्ण से मिलकर उन्हें अत्यंत प्रिय सुगंधित पुष्पों की पुष्पांजलि अर्पित कर वंदन किया। इसी प्रकार, देवी रुक्मिणी ने देवर्षि नारद द्वारा दिए गए पारिजात पुष्पों से श्रीकृष्ण की पूजा की थी। यह देखकर जब सत्यभामा ने भी अपने लिए पारिजात के फूलों की इच्छा प्रकट की, तब भगवान श्रीकृष्ण देवलोक गए और वहाँ से साक्षात् पारिजात वृक्ष को ही उखाड़कर ले आए और उसे द्वारका में रोपित किया।

हम जानते हैं कि श्रीविल्लिपुत्तूर में श्री पेरियाल्वार भगवान श्री वटपत्रशायी के लिए पुष्प मालाएँ गूँथकर अर्पित किया करते थे। उनकी सुपुत्री श्री गोदा उन मालाओं को पहले स्वयं धारण करती थीं और फिर उन्हें प्रभु को अर्पित करती थीं, जिस कारण उन्हें 'चूड़ी कोडुत्ता नाच्चियार' (माला पहनाकर देने वाली देवी) के नाम से ख्याति मिली। श्रीरंगम में कृपा बरसाने वाले श्रीरंगनाथ के लिए विप्रनारायण उर्फ तोंडरडिप्पोडि आल्वार ने अनन्य पुष्प सेवा की थी।

नम्माल्वार का भजन ''सिंधु पू मधिळुम तिरुवेंकटम'' हमें बताता है कि इस जगत के मूल कारण भगवान तिरुवेंकटपति की पूजा नित्य सूरिगण भी पुष्पों से करते हैं। एक बार श्री रामानुजाचार्य इस भजन की व्याख्या कर रहे थे, तब उन्होंने अपने शिष्यों की ओर देखकर पूछा, ''तिरुपति पर्वत पर हमारे भगवान तिरुवेंकटपति के लिए पुष्प सेवा करने हेतु आप में से कौन सहमत है?'' गुरु की आज्ञा पाकर अनंताल्वान आगे आए और इस सेवा में समर्पित हो गए। गुरु के आदेशानुसार, अनंताल्वान ने तिरुमल में एक पुष्करिणी बनवाया और पास में ही एक नंदनवन स्थापित किया, जहाँ से वे प्रतिदिन ताजे फूलों की मालाएँ गूँथकर भगवान तिरुवेंकटपति को अर्पित करते थे। 900 वर्ष पूर्व श्री अनंताल्वान द्वारा शुरू की गई यह पुष्प सेवा अब भी उनके वंशजों द्वारा निरंतर जारी है। आज भी सुबह और शाम को होने वाली तोमाल सेवा और शात्तुमुरै के समय, अनंताल्वान वंश की 26वीं पीढ़ी के सदस्यों द्वारा बगीचे से लाई गई मालाएँ भगवान तिरुवेंकटपति को समर्पित की जाती हैं। आइए, हम भी यथाशक्ति प्रभु के श्रीचरणों में पुष्प सेवा अर्पित करें और परम आनंदमय जीवन प्राप्त कर सुखी होवें।

सूर्यपुत्री
यमुनानदी के पुष्कर

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

यमुनानदी के पुष्कर के संदर्भ में...

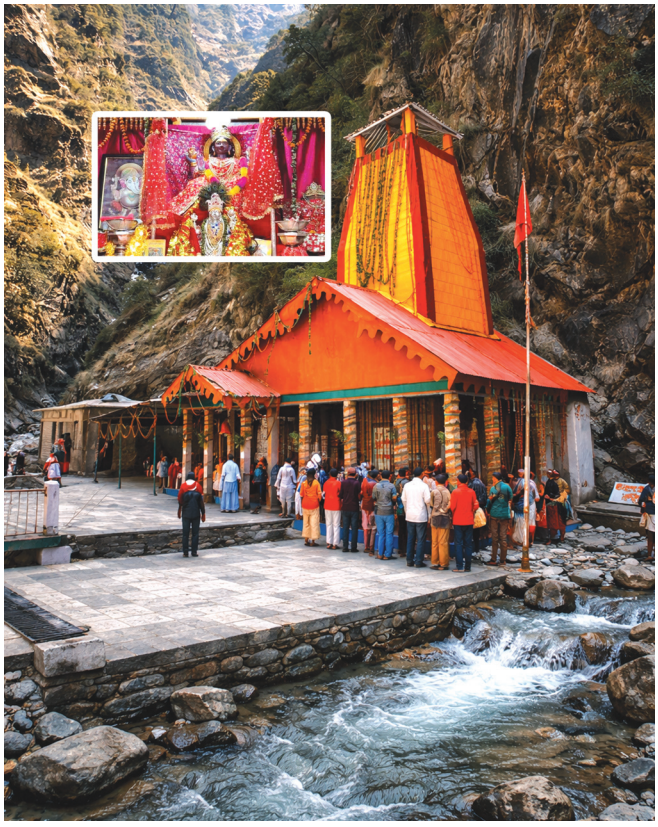
प्रस्तावना

भारत नदियों - नालों का देश है। गंगा, सिंधू, ब्रह्मपुत्र, गोमती, गंडक आदि उत्तर भारत की नदियाँ हैं, जिनमें ''यमुना'' नामक नदी भी अत्यंत प्रमुख है। यमुनानदी भारत की अत्यंत प्राचीन एवं ऐतिहासिक मानी जाती है। महाभारत और महाभागवत के कथानायक भगवान 'कृष्णकन्हैया' ने इसी नदी के किनारे पर 'नंदगोकुल' में अपना बाल्यकाल गुज़ारा था। वैसे यमुना व जमुनानदी भरत वर्ष के परंपरागत वृत्तांतों की आधार - शिला रही है।

आज अपने परंपरागत भरत खंड में पीढ़ियों से बहती यमुनामैया को संभावित किया जा रहा है, अर्थात् इस अखंड नदी के पुष्कर मनाये जा रहे हैं, जो बारह वर्षों में एक बार शुभ मुहूर्त पर होता है।

यमुना की जन्म कथा

स्वर्ग के देवता लोगों के प्रधान शिल्पी 'विश्वकर्मा' नामक महानुभाव ने अपनी लाड़ली पुत्री 'संज्ञादेवी' को कश्यप के वरपुत्र 'सूर्यदेव' से विवाह कराया। सूर्य नवग्रह मंडल को रश्मि प्रदान कर, उनका निरीक्षण करता है।



सूर्य और संज्ञा दम्पतियों ने वैवश्वतमनु, यम नामक पुत्र, यमुना नामक पुत्री, शनिमहराज आदियों को जनम दिया। संज्ञा की बहन 'छायादेवी' है, जिसके साथ भी सूरज भगवान ने कुटुंब का निर्वाह किया था। यमुना का पानी जरा-सा काला होने से नंदगोकुल में इसे 'कालिंदी' कहके भी पुकारा गया था।

यमुनानदी का उद्भव स्थल

भारत की अत्यंत पवित्र नदी 'यमुना' का उद्गम स्थल उत्तराखंड राज्य है।

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में हिमालयों में ''यमुनोत्री'' नामक प्रदेश से यमुना व जमुना निकल पडती है। समुंदर के तले से शुमार 6,387 मीटरों की ऊँचाई पर हुए 'बंदरपूँछ' नामक परबत श्रेणियों की नैरुती - कोने की 'चंपासर ग्लेसियर' से इस नदी माई का उद्गम होता है।

बहुवार्षिक नदी - यमुना

यमुना का उद्गम हिमालयों से होता है।

साल में अन्य समय वर्षाओं के कारण यमुना में पानी बहता है। दक्षिण भारत की नदियाँ ग्रीष्मकाल में सूख जाती है। मगर यमुना तो हिमालयों से बह जो पडती है, अतएव, गर्मियों में हिमालयों में बर्फ के पिघलने से नदी में पानी का प्रवाह होता है।

इस कारण यह गर्मियों में भी प्रवाहित हो करके जीवनदी का दर्जा पाती है। भारत में गंगा, जमुना, सिंधू, ब्रह्मपुत्र आदि नदियाँ इसी कारण जीवनदियाँ या बहुवार्षिक नदियाँ कहलाकर सम्मानित होती हैं।

एक कौतूहल वृत्तांत

भगवान श्रीकृष्ण की जनन कथा में -

श्रीकृष्ण का जन्म मथुरानगर में जेलखाना में हुआ था।

उसे मरण-भय था।

अतएव, कृष्ण के पिता वसुदेव अपने पुत्र को बचाने, उसे एक सुरक्षित प्रदेश में पहुँचाने, उसे लेकर निकल पड़ा। नंदव्रज में यशोदा के घर उसे पहुँचाना था।

आधीरात, वसुदेव नवजात कृष्ण को लेकर यमुनानदी के किनारे पर पहुँचा।

उस समय यमुना बहुत चंडगति से कचाकच भरकर बहती थी। वसुदेव इस चंडगति से बहती यमुना के किनारे उतरने से डरकर खड़ा रह गया।

यमुना ने देखा। यमुना पिछले जनम में ''विरजा'' नामक श्रीकृष्ण की प्रियतमा थी - गोलोक में। अतएव, उसने अपने पिता के हाथों सोये हुए अपने प्रियतम को पहचाना और उसे नंदगोकुल में जाने के लिए रास्ता बनाया।

और, वसुदेव उस रास्ते से निकल कर अपने प्रिय पुत्र कृष्ण को नंदव्रज में रानी जसुमति की गोद में पहुँचा आया।

तदनंतर काल में यमुना... कालिंदी ने श्रीकृष्ण से ब्याह किया।

यमुना के पुष्कर

पुष्कर-काल का समय 12 वर्ष हैं।

भारत की हर नदी माई के पुष्कर अत्यंत वैभवपूर्ण ढंग से संपन्न किये जाते हैं। ये बारह बरसों में एक बार मनाये जाने वाले उत्सव हैं।

यमुनानदी के पिछले पुष्कर 2014 में मनाये गये थे।

बारह वर्षों के पश्चात अब 2026 में इनकी आवृति हो रही है।

2026वें साल में यमुनानदी के पुष्कर जून 02 से जून 13 तक 12 दिनों तक अत्यंत वैभवपूर्ण ढंग से मनाये जाने वाले हैं।

बृहस्पति (गुरु) के कर्क (कर्काटक राशि) में प्रविष्ट होने के शुभ अवसर पर हर 12 वर्षों में एक बार इन पुष्करों का आगमन होता है।

इस पवित्र मुहूरत पर यमुना नदी में - मुख्य तौर पर- प्रयागराज, मथुरा, बृंदावन आदि पवित्र खासघाटों में स्नान



अथवा डुबकी लगाना या नदी की अर्चना करना अत्यंत पुण्यप्रद माना जाता है।

इन पवित्र पुष्करों के दौरान - सूर्योदयानंतर नदी आरती की जाती है। इसे देखने हर घाट में हजारों की तादाद में भक्तलोग नदी के किनारे इकट्ठा हो जाते हैं। पुजारी लोग ''नक्षत्र-आरती'' नाम से बड़े-बड़े आरतियाँ जला कर नदी माँ को बारह बार आरती उतारते हैं। यह देखने का एक ततंग समझा जाता है। लोग इस नदी-नक्षत्र-आरती उतारते हुए देखकर पुलकित हो उठते हैं।

प्रधान घाट

वैसे नदी-पर्यन्त यमुना में स्नान-घाट अनगिनत हो निकलते हैं, जिनमें भक्तमहाशय स्नान करते हैं।

प्रधान तौर पर - 1) प्रयागराज (त्रिवेणी-संगम) 2) मथुरा (विश्रमघाट) 3) बृन्दावन (केशि-घाट) 4) यमुनोत्री (उद्धव घाट) 5) आगरा 6) दिल्ली।

वैसे यह जानना अत्यंत आश्चर्यजनक होता है कि भारत की राजधानी दिल्ली यमुना के तट पर स्थित है। यमुनानदी में इन पुष्करों के समय में स्नान करने से अपने किये पापों का नाश होकर आदमी शुद्ध एवं पवित्र बन जाता है।

प्रत्यक्ष परमेश्वर सूरज भगवान की प्रियपुत्री, यमराज की सहोदरी यमुनादेवी की आराधना से विशेष फल-सिद्धि प्राप्त हो करके मनुष्य उत्तम गति प्राप्त करेगा।

पूजा कार्यक्रम

देश-विदेशों अथवा देश के कोने-कोने से आये लोग सुबह ही नदी में स्नान के पवित्र बन जाते हैं।

कई लोग इस दौरान अन्नदान अथवा वस्त्र आदियों का दान करते हैं।



अपने परदादा और परपिताओं की आत्मशांति में लोग 'तर्पण' छोड़ते हैं। इस कार्यक्रम की सहायता-हेतु कई ब्राह्मण लोग वहाँ मौजूद होते हैं।

नदी का विस्तार

यमुनानदी उत्तराखंड में यमुनोत्री में जनम लेती है।

फिर, उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद के यहाँ गंगानदी में संगम करती है। गंगानदी, यमुनानदी और अंतरवाहिनी-सरस्वती नदी - इन तीनों नदियों के संगम को ''त्रिवेणी संगम'' कहते हैं, जो भारतीयों के लिए यह प्रदेश अत्यंत पवित्र एवं पूजनीय प्रदेश माना जाता है।

''यमुनोत्री'' जो यमुनानदी का उद्गमस्थान है, हिन्दुओं के लिए पवित्र माना जाता है। पवित्र ''चार धाम'' यात्रा में यमुनोत्री एक है।

यमुना - छठ

''यमुना-छठ'' एक त्योहार का नाम है, जिसे यमुनातट के लोग अत्यंत भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। यमुनाछठ अर्थात् - ''यमुना-जयंती'' है। यह हर साल चैत्रमास की शुक्लपक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है।



यमुनाछठ एक पावन पर्व है, जो यमुना देवी के अवतरण के शुभअवसर पर प्रतीक के तौर पर मनाया जाता है।

इस दौरान, ब्रजक्षेत्र (मथुरा-बृन्दावन) में विशेष पूजा और उत्सव आयोजित किये गये थे।

उपसंहरण

''रहिमन, पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष, चून।।'' *(रहीम)*

इस प्रकार रहीम व्याख्या करते हैं।

रहीम के कहने के अनुसार - मनुष्य को ''पानी (इज़्ज़त)'' रखना चाहिए।

पानी इज़्ज़त है। पानी मनुष्य की संपदा है। और, पानी मनुष्य का सब कुछ है। पानी के अलावा मानव का जीना दूभर हो जाता है। अतएव, मनुष्य को पानी की इज़्ज़त करनी चाहिए। यही कारण है कि अनादि से मानव पानी, जल, जल-स्रोतों को पूजता आ रहा है।

इसी सिलसिले में आज लोग परंपरागत ढंग से नदियों को पूजते, आरती उतारते आरहे हैं। उसके सम्मान में ''पुष्करोत्सव'' मनाते हैं। हम सब मानवों को जल का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि पानी ही नागरिकता का मूलाधार स्रोत रहा है।

आज इसी कारणवश ऐतिहासिक ही नहीं बल्कि, पौराणिक आधारभूत मूल स्तंभ ''यमुनानदी'' का पुष्कर मनाया जा रहा है, जिसमें भरतवर्ष के हर हिन्दू-भाई का आह्वान है। जय हो! अस्तु!!



श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

वसुदान और तोंडमान का युद्ध

''आकाशराज के हरिपद के लिए निकल जाने के बाद भाई और पुत्र में कौन सिंहासन के अधिकारी बने हैं? उस के बारे में बताइए।'' शौनकादियों के पूछने पर सूत ने इस रूप में कहा। ''हे मुनिगण! राजा का भाई 'धरती मेरी है' कहने पर राजा का पुत्र 'मेरे पिता के द्वारा शासन किया हुआ राज्य मेरा है।' कहा। तब दोनों के बीच में झगड़ा हुआ। तोंडमान ने गुस्से में कहा ''हम दोनों युद्ध करेंगे। हम में जो जीतेगा राज्य उसका हो जाएगा। अगर तुम जीत जाओगे तो राज्य तुम्हारा। अगर मैं जीत जाऊँगा तो राज्य मेरा।'' कहते दोनों पौरुष से युद्ध करने के लिए अपने अपने बलों को इकट्ठा करने लगे। तब तोंडमान ने हरि के पास जाकर इस रूप में कहा।

''हे वसुदेव सुत! मुझे वसुदान से घोर युद्ध करना है। इसलिए मेरा साथ दीजिए।'' सुन कर हँसते हुए हरि ने अपने मन में इस रूप में सोचा। 'अगर मैं तोंडमान की सहायता करने जाऊँगा तो पद्मावती रूढ जाएगी। अपने भाई वसुदान के पक्ष में रहूँगा तो सति को उत्साह होगा।। तोंडमान मेरा परम भक्त हैं। दूसरी ओर वसुदान साला धन्य है। इसलिए दोनों के साथ मित्रता निभानी चाहिए। इस के लिए मुझे क्या करना है?' ऐसा सोचते तोंडमान की ओर देखकर इस रूप में हरि ने कहा। 'हे मामा! अगर मैं आप के पक्ष में आऊँगा तो पद्मावती अपने भाई के लिए चिंता करती रहेगी। ऐसा करूँगा कि किसी भी रूप में तुम्हारी विजय होगी।' कहते गुप्त रूप से उसे अपनी आप्त बात बोल कर साथ में हरि ने अपने चक्र उसे दे कर भेजा।

तदुपरांत उन का साला वसुदान ने आकर सहायता मांगी। तब हरि शीघ्र ही पद्मावती को वकुला मालिका के संरक्षण में छोड कर वसुदान के साथ नारायणपुर गए। वहाँ पर चतुरंग बलों के द्वारा प्रशंसित होकर हरि ने युद्धभेरी बजायी। उस भेरी की ध्वनि को सुन कर तोंडमान को बहुत गुस्सा आया। उसने धनु-बाण लेकर स्वयं ने युद्ध भेरी बजायी। तब तोंडमान ने वसुदान और हरि का सामना किया। तब वसुदान और हरि ने सुवर्ण रथ पर

आरूढ होकर वीरों के रूप में युद्ध क्षेत्र में पहुँच गए। इसे देखकर तोंडमान भी अपने रथ पर आरूढ होकर चतुरंग बलों के साथ युद्ध क्षेत्र में पहुँच गए। तब दोनों तरफ के बल एक दूसरे से युद्ध करने लगे। रथों पर रथ, हाथियों पर हाथी, घोडों पर घोडे, पैदलों पर पैदल के सैनिक दावा बोल कर तलवारें निकाल कर काटते, दबाते, धनु-बाणों से टंकार ध्वनि करते युद्ध करने लगे। कुछ मारों से अपने को बचाते, छिपाते, गड्ढों में गिरते, भालों से चुभाते, मुद्गरों से दबाते, काटते, मुसलों को उठाकर मारते, शूलों से चीरते युद्ध करने लगे। इस रूप में मानो पूरब और पश्चिम के सागर उफान पर हो, ऐसा दोनों दलों के बीच में घमासान युद्ध होने लगा। तब तोंडमान के बल वसुदान के बलों की मार से डर कर भागने लगे तो तब तोंडमान और पराक्रम के साथ आगे बढा। 'रुको, रुको' बोलते अपने बलों को रोकने की कोशिश करने लगे। स्वयं ने वसुदान के रथ पर नुखीले बाण छोडे। दूसरी ओर से वसुदान ने भी उन बाणों को काटा। तब तोंडमान महोग्र रूप में वसुदान पर बाण छोडे। वसुदान ने बाणों की वर्षा तोंडमान पर करवायी। तब गुस्से में आकर तोंडमान ने हरि के द्वारा दिये गए चक्र को वसुदान पर छोडा। तब चक्र प्रलय काल की अग्नि के रूप में वसुदान की ओर आने लगा। इस बीच हरि चक्र के सामने जाकर खडे हो गए। तब चक्र के लगने से हरि मूर्छित हो गए। हरि को रथ पर गिरते देखकर तोंडमान भयभीत होकर अपने शस्त्रास्त्र को छोड कर अपने रथ से उतर कर हरि के पास आया। हरि के मुख पर जल को छिडकाते हाथों में पत्ते लेकर हवा करने लगा।



तब वसुदान भी अपने रथ से उतर कर आंखों में आँसू बहाते हरि के पास आया। कपूर के टुकडों को पीस कर हरि के कानों में डालने लगा। तब काफी समय के बाद श्रीनिवास मूर्छा से उठकर बैठ गए। तब हाथ जोड कर तोंडमान ने कहा।

तोंडमान और वसुदान के पश्चाताप

''हे हरि! मैंने जब वसुदान पर भीकर चक्र को छोडने पर आप उस की आड में आ गए। तब चक्र के लगने से आप बेहोश हो गए। अहो! आप को अपकार करने का महापाप मुझे लगा। इस पाप से मुक्त होने के लिए मुझे काशी जाना चाहिए। हे हरि! अब मुझे आज्ञा दीजिए। राज्य पालन करने के लिए वसुदान को ही पट्टाभिषिक्त कीजिए। अब मैं राज्य नहीं चाहता हूँ। मुझे अब वैराग्य प्रदान कीजिए।'' यह कहते सुन कर हरि ने वसुदान को देखकर इस रूप में कहा। ''तुम को जन्म देनेवाला जनक परलोक गया है। चाचा पुण्य करने गंगा जाने के लिए कह रहा है। अब तुम कहो क्या करना है। सोच कर बताओ।'' यह सुन कर वसुदान ने विनय से कहा। ''हे हरि! आप मेरी रक्षा

करने के लिए चक्र की आड में आ गए। इसलिए चक्र आप को लगा। तब आप बेहोश हो गए। इससे मुझे पाप लगा है। इस पाप को दूर करने मुझे रामेश्वरम जाना होगा। मुझ से बडे मेरे पिता के भाई को राज्य पालन करने के लिए राजा बनाना ही ठीक है। यह लोक सम्मत है और मेरे लिए भी संतोष की बात है।'' कहने पर हरि।

राज्य के बंटवारे को सुलझाना

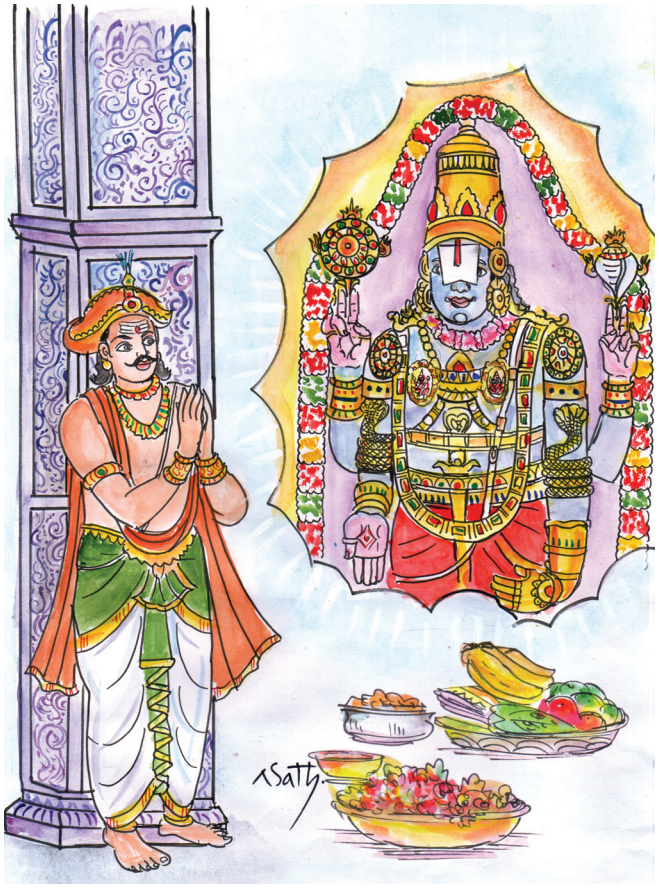
सुन कर शीघ्र अगस्त्य, शुक मुनियों को वहाँ बुलाया गया। तोंडमान और वसुदान के विचारों को उन को सुनाकर 'अब क्या करना चाहिए।' कहने पर उन्होंने कहा। ''अहो! हे हरि! काशी रामेश्वर इन को क्यों जाना है? भाईयों के बंटवारे के अनुसार आकाशराज के भाग को बांट कर उसे वसुदान को देना चाहिए। धर्म के अनुसार तोंडमान का भाग तोंडमान को देना चाहिए। इस रूप में दोनों को सम्मत होना चाहिए।'' इस रूप में मुनियों के कहने पर हरि ने सुधर्म की संपदा को दो भाग करके तोंडमान को आधा, दूसरा आधा आकाशराज के पुत्र वसुदान को देकर उन के बीच के झगडे को दूर किया। तब हरि फिर पद्मावती के पास पहुँच गए। इधर नारायणपुर में वसुदान आधे राज्य पर और तोंडमान आधे राज्य पर शासन करने लगे। दोनों का शासन धर्मानुसार जनरंजक रहा। तब राजा तोंडमान ने इस रूप में सोचा।

''वेंकटनायक साक्षात विष्णु हैं। साधारण मनुष्य नहीं है। अपने अज्ञान से मैंने उन को साधारण मानव के रूप में देखा। आप के दिव्य नेत्र, दिव्य पाद पद्मों की भक्ति और विश्वास के साथ अब मैं सुवर्ण पुष्पों से पूजा करूँगा। इस परमात्मा के मानव के रूप में पद्मावती के साथ विवाह करके दामाद के रूप में व्यवहार करना अद्भुत है। मेरे परमेश्वर ये ही हैं।''

तोंडमान चक्रवती को श्री वेंकटेश्वर के द्वारा विश्वरूप को दिखाना

इस रूप में सोचते तोंडमान शीघ्र ही अगस्त्य मुनि के आश्रम पर पहुँच गए। वहाँ पर हरि के पास पहुँच कर भक्ति से दंड प्रणाम किया। राजा को देखकर चक्री ने हँसकर इस रूप में कहा। ''हे नरनाथ! मैं तुम्हारा दामाद हूँ। इस रूप में मुझे प्रणाम करना क्या ठीक है?'' तब तोंडमान मुकलित हस्तों के साथ आनंद से इस रूप में कहा। ''हे माधव! तुम मुझ पर मायावरण डाल कर मत कहो। आप के चरणों की भक्ति को मुझे प्रदान करके मुझे कृतार्थ कीजिए।'' इस रूप में कहने पर हँसते हुए तब हरि ने तोंडमान को अपना विश्वरूप दिखाया। उस विश्वरूप को देखकर तोंडमान ने इस रूप में कहा।

दंडक



''श्री मद्रामधीश! जीमात संकाश! कालत्रयातीत! कंजात संजात ताता! जगत्राता! वेदार्थनिर्णेत! भूतात्मा! सीताधिपा! सद्गुणव्रात! पूतावनीजात नाथ! शचीनाथ दाता! महा घोरदैत्यादि रंभोलिधारा! सहस्रार संचार! धर्माद्रिधीरा! सदा सिंधु गंभीर! मंथलोद्धारा! नारायण! अनंत! आप के चरणों को देखने पाताल बन कर, शीर्ष भाग देखने के लिए सत्यलोक बन कर, मध्य देह को देखने मध्य लोक बन कर, नेत्र सूर्य-चंद्र बन कर, श्रोत्र दिशाएँ बन कर, नासिकाएँ सत्य युग्म बन कर, जिह्वा वीर भद्र बन कर, महाकुक्षी अंबोधि बृंद बन कर, सारी नाडियाँ प्रवाह बन कर, रोम वृक्ष बनकर, शल्य सारे पहाड बन कर, केश मेघ पाश बन कर, प्राण गंधवाहन बन कर, बाहु इंद्रादि बन कर, दिव्य गुह्येंद्रिय प्रजानाथ बन कर, वृष्टि सद्वीर्य बन कर, सुस्तन धर्म मार्ग बन कर, रीढ धर्म बन कर, सारे वाग्विंद्रीय अग्नि बन कर, दुष्टों के लिए दंड हस्त बन कर, नित्यादि चित्र आप के इस रूप में पाकर, सहस्रों नेत्र, सहस्रों हस्त, सहस्रों पाद शत कोटि संकाश पूर्ण प्रकाश से दीपित आप के विश्वरूप को देखने में मुझे कैसी शक्ति है?

हे देव! फिर अपने पूर्व रूप अपने सौम्य रूप को ही दिखाकर मेरी रक्षा कीजिए। चिदाकाशा! शेषाचलेश! तरिगोंड तत्पट्टणाधीश! नारसिंह प्रभू! श्रीनिवास! नमस्ते! नमस्ते! नमस्ते! नमः''

इस रूप में कीर्तन करते अनेक प्रकार से तोंडमान ने विनति की। इसे सुन कर संतोष के साथ परमपुरुष श्रीनिवास स्वामी ने अपने विश्वरूप को तिरोदान किया। फिर पूर्व सौम्य रूप धारण करके तोंडमान को देखकर इस रूप में कहा। ''हे मामा! मैंने विनोद से मनुष्य के रूप में वेश धारण करके तुम्हारी कन्या से विवाह किया।

इस के बाद मैं गृहस्थ धर्म निभाऊँगा। इस के लिए विश्वकर्म के द्वारा वेंकटाचल पर शीघ्र ही एक दिव्य सुवर्णमय विमल मणिमय भवन का निर्माण कराओ। इस मंदिर को इस रूप में निर्माण कराओ। वह ऐसा है कि अच्छे ढंग से दो गोपुरों के साथ, सप्त द्वारों के साथ उस के अनुकूल वास्तु शास्त्र के अनुसार वेंकटगिरींद्र पर मंदिर बनवा दीजिए। इस कलियुग में मुझे वहाँ पर रहने का अवसर दीजिए। उस पहाड पर खोदे गए कुँए के चारों तरफ रक्षा दीवार भी बनवा दीजिए।'' इस रूप में कहने पर राजा को आश्चर्य हुआ। कहा ''मैंने पहाड पर कभी कुँए को नहीं बनवाया।'' यह सुन कर हरि हँसते हुए कहा। ''हे मनुजेश्वर! जन्मांतर में किये गए उस धर्म को आप भूल गए। संदेह को दूर करने अब मैं उस की याद दिलाऊँगा।''

क्रमशः

अप्रैल-2026 महीने का क्विज-45 के समाधान

1) भगवान नृसिंह, 2) तुम्बुरु तीर्थ मुक्कोटी,

3) श्री पद्मावती के साथ,

4) जमदग्नि - रेणुका, 5) कुल्हाड़ी,

6) जमदग्नि, 7) श्री पद्मावती देवी,

8) आं.प्र., विशाखपट्टणम् में,

9) नृसिंह भगवान के साथ, 10) रत्नगिरि,

11) आदिनाथवल्लि और कुरूहूरवल्लि,

12) आंडाल,

13) वटपत्रशायी (रंगमन्नार),

14) अक्षयतृतीया, 15) गोविन्द विमान.

कार्वेटिनगर, श्री वेणुगोपाल स्वामीजी

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

तिरुपति से 48 कि.मी. की दूरी पर कार्वेटिनगर स्थित है। यहाँ स्थित वेणुगोपाल स्वामी तक पहुँचने के लिए अप्पलायगुंटा से दो मार्ग हैं। पहला मार्ग पुत्तूर से और दूसरा रायलचेरुवु तथा पच्चिकापलम से होकर है। दूसरा मार्ग सुन्दर रमणीय पर्वतीय प्रांतों से गुजरता है।

कारु-वेट्टि नगर का मतलब - जंगल को काटकर समतल बनाया गया नगर है। कार्वेटिनगर के राजाओं ने इस पर अपना शासन चलाया। वे सूर्यवंशीय थे। करिकाला चोला के पोता तोंडमान इलयान तिरयान का पोता नारायणराज था। वही कार्वेटिनगर राजाओं का मूलपुरुष था। नारायणवन उन्ही के नाम से बना है।

मंदिर का इतिहास

इस प्रांत पर प्रथम चोलराजा, पल्लवराजा बाद के चोलराजा, यादवराजा, विजयनगर राजाओं के बाद अंततोगत्वा कार्वेटिनगर राजाओं ने शासन चलाया था। यादवराजाओं ने अपने शासनकाल में अनेक कृष्ण मंदिरों को बनवाया है। उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत में भगवान कृष्ण के कम मंदिर है। दक्षिण भारत में भगवान कृष्ण को ज्यादतर संतान वेणुगोपाल स्वामी के रूप में पूजा जाता है। कृष्णा जिले के हंसलदीवी में भी एक पुराना संतान वेणुगोपाल स्वामी मंदिर है।

लोगों का मानना है कि कृष्ण मंदिरों में से कार्वेटिनगर एक है। फिर भी कुछ लोगों का मानना है कि ई. के 1719 को कठारी शाल्वमाकराजु ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। लेकिन यह पता नहीं चलता है कि मन्दिर को एक नए रूप से निर्मित या जीर्णोद्धार किया था। इस मंदिर के प्रांगण में पत्थरों पर चोल राजा त्रिभुवन सम्राट,



तीसरे राजराज देव का शिथिल शिलालेख दिखाई देता है।

कार्वेटिनगर वेणुगोपाल स्वामी मंदिर जो 400 साल से भी ज्यादा पुराना है। कुछ लोगों का मानना यह है कि इसे वेंकट वंश के राजा वेंकट पेरुमाल ने बनवाया था, जो नारायणवन के शासक थे। जैसा कि आजकल मंदिर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अधीन में है। 1989 में इस मंदिर को तिरुमल तिरुपति देवस्थान अपने अधीन में लेकर, मंदिर में होनेवाले सभी त्यौहार एवं उत्सवों का संचालन किया जा रहा है।

इस मंदिर में रुक्मिणी एवं सत्यभामा समेत वेणुगोपाल स्वामी विराजमान है। इस पवित्र स्थान में श्रीकृष्ण को संतान वेणुगोपाल स्वामी के रूप में दिखाया गया है। जो बांसुरी पकडे हुए है। एक और उपमंदिर में हनुमान सहित सीता, राम और लक्ष्मण की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

कार्वेटिनगर वेणुगोपाल स्वामी मंदिर का मुह पूरब की ओर है और इसमें पाँच मंजिला राजगोपुर हैं। इस मंदिर के प्रमुख शिखर (राजगोपुर) का जीर्णोद्धार 30 लाख रुपयों के व्यय करते हुए 7 मई 2006 के दिन तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने इस पर कलश की स्थापना की। यहाँ पर एक सुन्दर और विशाल स्कंद पुष्कर भी है। इसके तटपर स्वामी लक्ष्मणाचार्य द्वारा प्रतिष्ठित माँ राजराजेश्वरी देवी का मंदिर स्थित है।

श्री वेणुगोपाल स्वामी के लिए 9 दिनों का ब्रह्मोत्सव, 3 दिनों का तेप्पोत्सव (प्लवोत्सव), दो दिनों का पवित्रोत्सव विशेष रूप से मनाए जाते हैं। गोकुलाष्टमी की पूजा अर्चना का भी काफी महत्व है। स्थानीय लोग जन्माष्टमी के मौके पर होनेवाली 'उट्टि उत्सव' (घडे को फोड़ने) में उत्साह से हिस्सा लेते हैं। मूलमूर्तियाँ वेणुगोपाल स्वामी, रुक्मिणी एवं सत्यभामा के पीछे गौ की मूर्ति भी देखी जा सकती है। उत्सवमूर्तियों को जुलूस में ले जाते समय उनके साथ चाँदी से बने एक सुन्दर गाय की मूर्ति भी देखी जा सकती है। यह सब का मन मोह लेती है।

माना जाता है कि भगवान श्री वेणुगोपाल स्वामी इससे पूर्व पापविनाशनम के पैदल मार्ग पर स्थित समाधियों के पास, यानी हाथीरामजी मठ के वेणुगोपाल स्वामी मंदिर के पास रहते थे। रेड्डी राजाओं का तिरुमल तिरुपति के प्रति लगाव के कारण उन्होंने वहाँ के मूलमूर्तियों को ले आकर निस्संकुदुर्ग में मंदिर का निर्माण करके उन मूर्तियों को प्रतिष्ठित किया। हो सकता है कि यह घटना उस समय की है जब सालुवा नरसारेड्डी को पिठापुरम से बुलाकर चालुक्य चोले भूपति विमलादित्य जी ने उन्हें शेषाचल के शासन की जिम्मेदारी सौंपी थी। इसके बाद कार्वेटिनगर के राजाओं ने निस्संकुदुर्ग से इस मूलमूर्ति को ले आकर वेणुगोपाल स्वामी के मंदिर में पुनःप्रतिष्ठित किया।

निस्संकुदुर्ग, कार्वेटिनगर से सात-आठ कि.मी. की दूरी पर नगरी प्रांत के पर्वतों में स्थित है। नारायणवन के समीप में है। माना जाता है कि, इसे निस्संकुमल्लु (पल्लव पेरूंजगन के पुत्र कोप्पेडु जंगन) ने जब तेलुंगर (काकति गणपतिदेव) को उत्तर की ओर भगाया था, उस समय अपनी सुरक्षा के लिए उसने इसका निर्माण किया होगा। नारायणवन पर जिन-जिन राजाओं ने शासन किया है, उन सभी के लिए यह निस्संकुदुर्ग केन्द्र स्थान बना रहा।

तिरुमल के श्रीनिवास जी आकाशराज तथा उनके छोटे भाई तोंडमान सम्राट के दामाद हैं। इन्हीं के वंशज कार्वेटिनगर राजाओं के भी वे दामाद होते हैं। यही कारण है कि जब भी वे तिरुमल में पधारते थे, उन्हें राज सम्मान के साथ मंदिर में ले जाकर विशेष दर्शन करवाते थे। जब तक कार्वेटि राजाओं का जमाना रहा वे इन मंदिरों के धर्मकर्ता हुआ करते थे, लेकिन आज वे नही रहे हैं। तिरुवल्लूर तिरुत्तणी, तिरुवालंगाड (सभी आज

तमिलनाडु में है) नागुलापुरम, नारायणवन, अप्पलायगुंटा जैसे प्रांत उनके अधीन में थे। उनके सौभाग्य के बारे में क्या कहना! तमिलनाडु के कुछ हिस्सों पर उनका अधिकार था। तिरुत्तणी तथा अतिमंजेरिपेट तालूक उनके शासन में आते थे।

साल्व रेड्डियों का पूरा विनाश हुआ, तथा अपनी मृत्यु के समय उनके द्वारा दिए गए शाप के कारण ही, सात पीढियों के बाद कार्वेटिनगर के वंशज भी पूरी तरह से मिट गए। यह सर्वविदित तथ्य है कि आज कार्वेट के वंशज कोई भी शेष नहीं रहे है। इस गाथा से बोध होता है कि साल्व रेड्डी प्रथम पीढी के नहीं रहे होंगे। लगता है कि वे दूसरी पीढी के नंदिगुंटा वेंकट रेड्डी के परिवार के हैं। इन सबके मरने के बाद भी इनके वंश की एक लडकी 'बंगारम्मा' जीवित रही और बाद में देवता का रूप धारण किया। आज वही इस कार्वेटिनगर की ग्रामदेवता मानी जाती है। वर्तमान में, 'बंगारु गंगम्मा' के नाम पर उनका उत्सव मनाया जाता है।

कार्वेटिनगर के राजा बड़े कलाप्रेमी रहे हैं। इनके दरबार में अष्टदिग्गज कवि हुआ करते थे। वर्ष 1884 में ही श्री भारती लीलासदन (मुद्राक्षरशाला) नाम के मुद्रणालय को स्थापना हो चुकी थी। इसमें उनके उत्तम ग्रंथों का प्रकाशन किया गया। प्रखर ज्योतिषी पंडितों द्वारा कार्वेटि राजदरबार का पंचांग भी यही से प्रकाशित होता था। हाथीरामजी मठ महंत इसे ही तिरुमल तिरुपति देवस्थान के पंचांग के रूप में वर्ष 1935 तक अपनाते रहे हैं।

कार्वेटिनगर के कवियों में पोलिपेद्दिय वेंकटराय कवि काफी प्रसिद्ध हैं। इन्होंने



वेणुगोपाल शतक की रचना की थी। इन्होंने इस शतक को वेणुगोपाल स्वामी को ही समर्पित कर दिया था। एक और कवि सारंगपाणी भी अपनी रचनाओं के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उन्होंने 'सारंगपाणी वेणुगोपाल पद' नाम से रचना की। ग्राम देवता बंगारम्मा के बारे में भी ''वेणुगोपाल की सहोदरी, कंबुकंठी'' कहकर उनकी स्तुति की। सारंगपाणी ने गरुड़ सेवा का वर्णन करते हुए गीत लिखा है जिसका अर्थ इस प्रकार है -

ये देखे वेणुगोपाल स्वामी अपने वाहन पर -

सवार होकर भक्तों को आनंदित करने

राजमार्ग पर निकले हैं। उनका सुन्दर

मनमोहक रूप देखते ही बनता है।

कहा जाता है कि उनका गरुड़वाहन इतना बडा था कि उस पर 40 लोग एक साथ सवार हो सकते थे। यह कांचीपुरम में आयोजित होनेवाले गरुड़ सेवा में वाहन के बराबर का है।

उपलब्ध शिलालेख के अनुसार कार्वेटिनगराधीश इम्मडि नरसिंह ने इस चन्द्रगिरि को ई. के 1000वीं वर्ष में निर्मित किया था। ये यादव राजा थे। सूर्यवंशीय कार्वेटिनगर के राजाओं और अनंतराज पेटमट्ल राजाओं के बीच रिश्ता भी हैं।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि



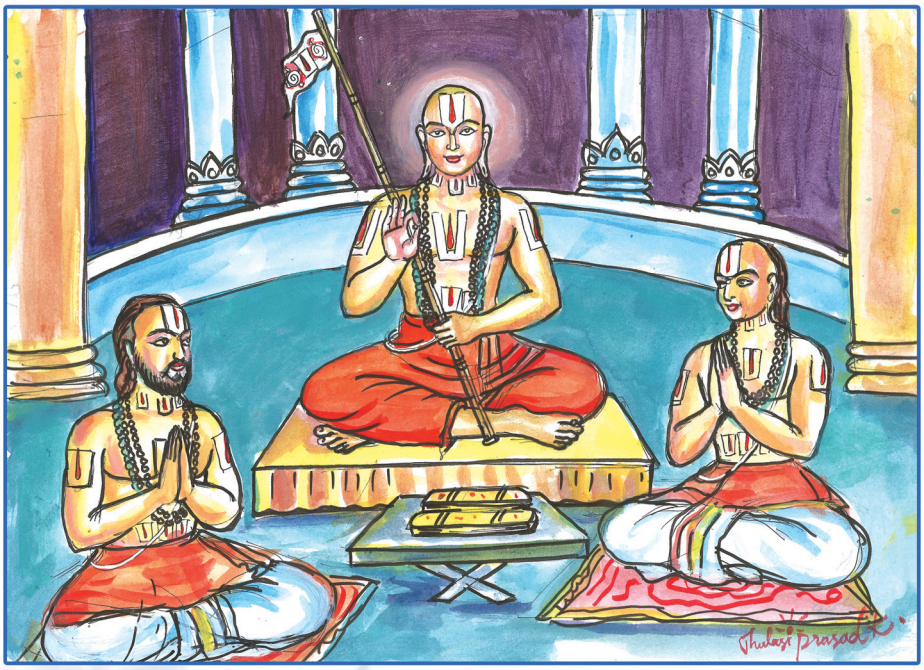
मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

नैयुमनं उन्गुणंगळै युन्नि, एन्नाविरुन्दु एम्
ऐय निरामानुज नेन्नळैक्कुम्, अरुविनैयेन्
कैयुम् तोळुम् कण् करुदिडुम् काण क्कडल् पुडैशूळ्
वैयमिदनिल्, उन्वण्मै येन्वाल् एन्वळर्न्ददुवै ॥१०२॥

भगवान् रामानुज! मम हृदयं भवतो गुणान् ध्यायंध्यायं द्रवीभवति; दृशावपि भवद्दिव्यमंगलविग्रहदिदृक्षाविवशे स्तः; सागरपरिवृतायामिह मेदिन्यां भगवत्कृपाप्रवाहस्य मयि प्रसृतिरचिन्त्यहेतुका हंहो!॥

(हे गुरूजी!) मेरा मन आपके गुणों का ही ध्यान करता हुआ पिघल जा रहा है; मेरी वाणी सुदृढ अध्यवसाय के साथ यों पुकार रही है कि, ''हे हमारे नाथ श्री रामानुज स्वामिन्!'' मुझ महापापी के हाथ भी (आपके लिए) अंजलि कर रहे हैं; आँखे (आपके) दर्शन पाना चाहती हैं। समुद्र-परिवृत इस विशाल पृथ्वीतल पर मुझ पर ही आपकी दया जो इस प्रकार फैल रही है, इसका कारण क्या होगा?



क्रमशः

जन्म नक्षत्र - स्वाति नक्षत्र, ज्येष्ठ मास

अवतार स्थल - श्रीविल्लिपुत्तूर

आचार्य - श्रीविष्वक्सेन

ग्रंथ रचना सूची - तिरुप्पल्लांडु, पेरियाळवार तिरुमोळि

श्री पेरियवाच्चान पिल्लै श्री पेरियाळवार के तिरुप्पल्लांडु व्याख्या की भूमिका में अत्यंत सुंदरता से उनका गुणगान करते है। पेरियवाच्चान पिल्लै यहाँ तादात्म्य रूप से स्थापित करते हैं कि बद्ध जीवात्माओं को इस भव सागर से उत्थान हेतु श्री पेरियाळवार का अवतार हुआ। श्री पेरियाळवार भगवान श्रीमन्नारायण के निर्हेतुक कृपा से सहज रूप में भगवान श्रीमन्नारायण के दास्य से अलंकृत है। कहते हैं कि आप श्रीमान चाहते थे कि आपका जीवन केवल भगवद्-कैंकर्य में ही होना चाहिये और इसी कारण आपने शास्त्रों का अध्ययन कर पता लगाया कि सर्वश्रेष्ठ कैंकर्य क्या है। यह (सर्वश्रेष्ठ कैंकर्य के बारे में) आपने भगवान श्रीकृष्ण के अवतार से संबंधित लीला (कहते है कि कंस की सभा में प्रवेश करने से पहले श्रीकृष्ण भगवान मथुरा में प्रस्थान कर एक मालाकार के घर में ठहरे जहाँ उन्होंने अपने वस्त्र इत्यादि बदले।

तत्पश्चात उन्होंने मालाकार से निवेदन किया कि उन्हें निर्मल नूतन माला भेंट के रूप में दें। मालाकार श्रीकृष्ण भगवान की सुंदरता से मुग्ध होकर अत्यंत प्रेमभावना से भगवान को माला दिया। और जिसे स्वयं भगवान ने हर्ष से स्वीकार किया) को स्मरण कर यह प्रतिपादित किया कि फूलों की माला बनाना ही सर्वश्रेष्ठ कैंकर्य है। इस प्रकार अपने शेष काल पर्यंत तक वे भगवान के लिये स्वयं फूलों के बगीचे का निर्माण कर, फूलों के बीजों को बोकर, उसका संरक्षण कर, उत्पन्न फूलों से फूलों की माला बनाकर अत्यंत प्रेमभावना से श्रीविल्लिपुत्तूर भगवान को अर्पण करते रहे। कहते हैं कि अन्य आळवारों और आप श्रीमान में आसमान और जमीन का अंतर है। अन्य आळवार अपने इच्छाओं की पूर्ति की चाह रखते थे (भगवान की सेवा करना)। परंतु आप श्रीमान इनके उल्टे थे। आप श्रीमान तो केवल भगवान की इच्छाओं की परिपूर्णता की चाह रखते थे (यानी भव सागर में त्रस्त सभी जीवात्माये भगवद्-धाम जाकर नित्य कैंकर्य करना चाहे, यह उनके चाहना के विपरीत क्यों ना हो)।

अन्य आळवार सोचते थे कि भगवान ही रक्षक है और इस कारण वे सभी संरक्षित है (यानी भगवान का धर्म है उनके शरणागत का संरक्षण करना) और इस प्रकार अपनी चिंता दूर करते थे। परंतु आप श्रीमान तो यह सोचते थे कि आप भगवान के संरक्षक है और भगवान की रक्षा, देखभाल इत्यादि करना आपका कर्तव्य है। यही बात श्री पिल्लै लोकाचार्य और श्री वरवरमुनि जी ने अति सुंदरता से बताया है। आप श्रीमान की रचना 'तिरुप्पल्लांडु' भी अन्य दिव्यप्रबंधों की तुलना में पूर्वोक्त



कारण से सर्वोत्तम माना जाता है और अत्यधिक रूप से इसी का गुणगान होता है। अन्य दिव्यप्रबंध हालांकि वेदांत, अनेकानेक तत्त्वविषयों को प्रतिपादित करते है, लेकिन इनकी गणना में आप श्रीमान का तिरुप्पल्लांडु केवल भगवान का मंगलाशासन करता है। अन्य प्रबंध बहुत बडे हैं, परंतु आपकी यह रचना बहुत छोटी, सरल और स्पष्ट है। कहते हैं कि आपने बारह पाशुरों में मूल सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है।

अब हम देखेंगे कि श्रीवचनभूषण के 255वाँ सूत्र कैसे आप श्रीमान और यतिराज जी के वैभव को दर्शाता है- अल्लातवर्गळैप्पोळे केट्किरवर्गळ उडैयवुम, चोल्लुकिरवरगळ उडैयवुम् तनिमैयैत् तविर्क्कैयन्निक्के आळुमार एन्गिनवन् उडैय तनिमैयैत्तविर्क्कैकागवायित्तु भाष्यकाररुम् इवरुम् उपदेच्चिप्पतु।

अन्य आचार्य/आळवारों की भांति, आप श्रीमान और श्री भाष्यकार ने शास्त्रों के अर्थों का उपदेश देकर सभी जीवात्माओं को सुधारकर और इन सभी को भगवान के नित्य कैंकर्य में संलग्न किये। और इस प्रकार से आपने श्री भगवान के एकाकिपन को दूर किया क्योंकि भगवान अपने बेटों समान जीवात्माओं का नित्य हित चाहते हैं और सभी जीव उनका शरण पाकर उनका नित्य कैंकर्य करें। अगर कोई भी जीव इस भवसागर में त्रस्त दिखाई पडता है तो भगवान एक दम से उदास और अप्रसन्न हो जाते हैं।

जिस प्रकार एक पिता या माता को अपने स्वात्मज पर प्रेम भावना रहती है, उसी प्रकार की भावना भगवान में भी है। यहाँ शिक्षक-शिष्य का एकाकिपन और जीवों का उद्धार वास्तव में महत्त्वपूर्ण उद्देश्य नहीं अपितु भगवान की इच्छा की पूर्ति और जीवों का स्वाभाविक रूप से कैंकर्य करना। श्री वरवरमुनि स्वामीजी पूर्वोक्त सूत्र की व्याख्या में कहते है की श्री विष्णुचित्त स्वामीजी को श्री भगवान के सुशील और कोमल स्वभाव का ज्ञान था और स्पष्ठ रूप से दर्शाते है कि ऐसे भगवान कभी भी जीवात्मावों के विरह में नही रह सकते है। अतः भावनामुग्ध आळवार इसी भाव में पूर्ण रूप से स्थित रहकर उनकी सेवा करना चाहते थे। श्री वरवरमुनि स्वामीजी इसके जरिये श्री पिळळैलोकाचार्य के कथन ''भाष्यकार'' शब्द के वैभव को भी दर्शाते है।

वे कहते है - श्री भाष्यकार (स्वामि रामानुजाचार्य) ने वेदान्त के सार को अपने श्रीभाष्य में दर्शाया है यह केवल पूर्ण रूप से भगवान की इच्छा पूरी करने हेतु ही किया गया है अर्थात भगवद्-कैंकर्य है। यह वेदान्त के मार्गदर्शन से अभिन्न है।

श्री वरवरमुनि स्वामीजी अपने उपदेश रत्नमाला में श्री विष्णुचित्त स्वामीजी के वैभव को क्रमानुसार पांच पाशुरों में वर्णन करते हैं जो इस प्रकार है -

पहला - सोलहवें पाशुर में, वह अपने हृदय से कहते हैं कि ज्येष्ठ मास का स्वाति नक्षत्र अत्यंत पावन और पवित्र है क्योंकि उसी दिन श्री पेरियाळवार का आविर्भाव हुआ है जिन्होंने तिरुप्पल्लांडु का निर्माण किया। यह पूरे विश्व के लिये शुभदायक कल्याणकारक और मंगलदायक प्रतीत हुआ है।

दूसरा - सत्रहवें पाशुर में कहते हैं, हे मेरे हृदय तुम सुनो! ऐसे महाजनों महाज्ञानियों का कोई बराबर नहीं जो श्री पेरियाळवार के तिरुनक्षत्र का नाम सुनकर हर्ष से प्रफुल्लित होते है।

तीसरा - अठारहवें पाशुर में कहते हैं, भगवान का मंगलाशासन करने की उनकी इच्छा अन्य आळवारों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ है। भगवान के प्रति वात्सल्य भाव की वजह से आप सदैव के लिये पेरियाळवार के नाम से जाने गए।

चौथा - श्री वरवरमुनि स्वामीजी इस उन्नीसवें पाशुर में कहते हैं, अन्य दिव्य पाशुरों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ और अग्रगण्य तिरुप्पल्लांडु है क्योंकि वह केवल भगवान के मंगलाशासन ही करता है। जिस प्रकार वेदों में प्रणव शब्द ओंकार है, उसी प्रकार द्रविड वेद का प्रारंभ तिरुप्पल्लांडु से होती है। हर एक आळवार द्वारा विरचित पाशुर दिव्य अनोखा और निष्कलंक है।

पांचवाँ - बीसवें पाशुर में वे अपने हृदय से कहते हैं- तुम वेद-वेदांगों और अन्य प्रमाणों में ढूँढकर बतलावों कि क्या तिरुप्पल्लांडु से बडकर कोई प्रबंध है और क्या पेरियाळवार से सर्वश्रेष्ठ और अग्रगण्य अन्य आळवारों में कोई है? अर्थात् कोई नहीं। उनके जैसा कोई नहीं।

उनकी एक और विशेषता है कि वे साक्षात् परब्रह्म श्रीरंगनाथ जी के ससुर थे। अर्थात् अपनी गोद ली गई पुत्री श्री आंडाळ देवीजी को उन्हें समर्पित कर, उन दोनों का विवाह करवाया। इस धारणा से अपने मन को एक चित्त करते हुए, उनके वैभवशाली चरित्र को आगे देखें। पेरियाळवार श्रीविल्लिपुत्तूर में प्रकट हुए जहाँ कई सारे वेदों के तत्त्वज्ञ रहते थे। वे ज्येष्ठ मास के स्वाति नक्षत्र में प्रकट हुए और उनका माता-पिता ने उनका नाम विष्णुचित्त नाम रखा। कहते हैं कि जैसे गरुड़ (जो वेदात्म से जाने जाते हैं - यानी जिनका शरीर ही वेद है) सदैव अपने स्वामी श्रीमन्नारायण के दिव्यचरण को पकडे हुए रहकर परतत्व का प्रतिपादन करते हैं, ठीक उसी प्रकार पेरियाळवार ने परतत्व का निरूपण दिया (अर्थात् सकलगुणसंपन्न अखिल जगत के सृष्टि करता धरता भगवान श्रीमन्नारायण ही परतत्व हैं और यही वेदों में प्रतिपादित है)। इसी कारण उन्हें श्री गरुड़ का अंशावतार माना जाता है। हालांकि कहा जाता हैं कि हमारे आळवार ऐसे जीव हैं जो भगवान के निर्हेतुक कृपा से चुने गए हैं। और जिन्होंने दिव्य व्यक्तित्व तत्पश्चात प्राप्त किया।

कहा जाता है कि जिस प्रकार भगवान की कृपा से भक्त प्रह्लाद जन्म से ही भगवद्-भक्ति से संपन्न थे, उसी प्रकार पेरियाळवार भी जन्म से श्री वटपत्रशायि भगवान की असीम कृपा से संपन्न थे। शास्त्र कहता है - ''ना अकिंञ्चयचित्कुर्वतस्च शेषत्वम्'' अर्थात् अगर जीव भगवान के लिये छोटे से छोटा कैंकर्य ना करे तो उस जीव शेषत्व नष्ट (जीवित) नहीं रहता।

केवल भगवान की इच्छा हेतु वे सोचने लगे की अब उनको भी कुछ कैंकर्य करना चाहिये वरना उनका शेषत्व तो नष्ट हो जायेगा। इसी विचार से उन्होंने अनेकानेक पुराणों, उपनिषद इत्यादि में भगवद्-कैंकर्य के बारे में ढूंढने लगे। वे यह देखते है की सर्वेश्वर भगवान श्रीमन्नारायण मथुरा में श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए है ज्योकि इस प्रकार से वर्णित है -

एष नारायण श्रीमान क्षीरार्णव निकेतनः।
नाग पर्यंकम उत्सृज्य ह्यागतो मथुरापुरीम्।।

अर्थात् - यह श्रीमन्नारायण जिनका निज धाम श्री क्षीरसागर निकेतन है, वही अपने पर्यंक आदिशेष को छोडकर मथुरा पुरी में श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए है।

नम्माळवार कहते हैं- ''मंणणिन् भारम् णीकुतर्के वडमथुरैप्पिरंतान्'' अर्थात् - आदिपुरुष भगवान श्रीमन्नारायण माने श्रीकृष्ण भगवान धरती के भोज को भोज करने हेतु अवतरित हुए। महाभारत में भी कुछ इस प्रकार से कहा गया- वह नित्य भगवान श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लेकर संत-साधु-योगियों इत्यादियों के संरक्षण, धर्म की स्थापना और दुष्टों का विनाश हेतु अपने धाम द्वारका में रहते हैं। ऐसे भगवान अत्यंत सुंदर श्री देवकी के गर्भ से जन्म लिये और उनका पालन-पोषण अत्यंत सुंदर सुशील श्री यशोदा मैय्या ने किया। ऐसे सुंदर भगवान श्रीकृष्ण जो सदैव नित्यसूरियों के भव्य मालाओं से सुशोभित हैं, वे मालाकार (जो कंस के लिये सेवा करता था) के पास जाकर उनसे एक सुंदर माला भेंट के रूप में निवेदन करते हैं। स्वयं भगवान ने मुझसे मेरी माला का निवेदन किया यह सोचकर मालाकार अत्यंत प्रसन्नता से उन्हें ताजा और अत्योत्तम माला समर्पण करता है। यह वार्ता पुराणों, इतिहासों इत्यादि में देखकर, अचम्भित पेरियाळवार यह निर्धारण करते हैं कि- भगवान को अति प्रिय सेवा है - ''माला बनाकर उनको समर्पित करना।'' और इस प्रकार से एक चित्त पेरियाळवार ने इस सेवा को आरंभ किया और श्रीविल्लिपुत्तूर के श्री वटपत्रशायि भगवान को यह मालायें समर्पित करने लगे।

क्रमशः



(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 17

विजयनगर साम्राज्य का आरंभिक काल

यह श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर के अनेक पक्षों और क्रिया-कलापों का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करनेवाला समय है। विजयनगर राज्य की पहली छवि ई. के बाद की चौदहवीं सदी के मध्य से मिलती है। 7वीं सदी से संगम वंश के प्रथम राजाओं का पक्ष मिलता है। धीरे-धीरे संगम वंश के राजाओं का प्रभाव विस्तृत होता हुआ मिलता है।

संगम राजवंशियों का प्रथम परिलेख हमें बुक्क राय-I (सन् 1355-1377 ई.) के समय का प्राप्त होता है। इसमें तिरुवेंकटमुडैयान को एक गाँव के देवदान का उल्लेख मिलता है। हर दिन 2 तिरुप्पोनकम् भगवान को अर्पित करने के लिए यह प्रदान किया गया। इस परिलेख के खंडित रूप में होने के फलस्वरूप उसका काल और उस गाँव का नाम मिल नहीं पा रहे हैं (संख्या 178 जिल्द - I)। शायद यह चढाव ''बुक्करायन संधि'' (नं.219 और 225) ही हो।

18 जनवरी, 1388 ई. के प्रभव नाम संवत्सर में अरिशानालैयम् पुष्पवाटिका और मठम् के अधिकारी मुल्लै तिरुवेंकट जीयर ने 100 पणम् से प्राप्त आमदनी से, जो पुंगोडु गाँव से प्राप्त हुआ था, एक उत्सव का आरंभ किया। यह मासि महीने में विजयनगर साम्राज्य के सम्राट हरिहर - II के नाम पर संपन्न किया गया था (सन् 1377 - 1404 ई.)। इस राशि को समुन्नत बनाने का प्रयास सन् 1390 के जून मास में किया गया है। यह एक और 100 पणों की राशि है। इससे आवश्यक सामग्री और वस्तुएँ प्राप्त की गयी हैं (संख्या 185 और संख्या 186 जिल्द - I तथा संख्या 83 जिल्द - II)।

देवराय - II ने (सन् 1423-1446) पहली बार भगवान श्री वेंकटेश्वर का दर्शन किया है। यह 5 दिसंबर 1429 ई. में हुआ। उन्होंने भगवान को तीन गाँवों का दान दिया - इनमें विक्रमादित्य मंगलम्, एलमंडिय (चिरुकूरकालु सहित)- ये दोनों गाँव राज-भंडार से संबन्धित हैं और चन्द्रगिरि राज्यकोष से जुडे हैं तथा कलरु विड्डाले गाँव, पहले अन्यत्र दिया गया ग्राम है। इस देवदान के साथ-साथ 2200 स्वर्ण वराह मुद्राएँ भी प्रदान की है। यह दान 30 थालियों का पका अन्न प्रसाद तथा एक थाली भर पायसम् (पका

जुलाई 2026

05 से 07 तक तिरुचानूर
श्री सुंदरराजस्वामीजी का अवतारोत्सव
16. पूरी जगन्नाथ रथयात्रा
17. तिरुमल श्री बालाजी का आणिवर आस्थान
17 से 19 तक श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का
साक्षात्कार वैभवोत्सव
25. तोलि (पहला) एकादशी,
चातुर्मास्य व्रत आरंभ
26. तिरुमल, नारायणगिरि में छत्रस्थापन,
तुलसीमाहात्म्य
29. गुरुपूर्णिमा - व्यासपूर्णिमा

चावल, दूध, शक्कर और इलायची आदि से युक्त) एवं एक थाली भर अप्पम् (मीठा पदार्थ) के लिए था। कुल मिलाकर 33 थालियाँ (गंध बिलाव - पुनुगु सुगंध से युक्त दो कटोरियाँ) युक्त अर्पण के लिए। गंध - पुनुगु (बिलाव) तैल भगवान श्री वेंकटेश्वर की मूर्ति पर लेपन के लिए था। आश्वयुज मास में संपन्न होनेवाले 9 दिन पर्यन्त उत्सव के लिए भी प्रावधान राजा ने किया था। यह उत्सव सितंबर-अक्तूबर महीनों में चलता है। उस समय पुनर्वसु नक्षत्र से लेकर स्वाति नक्षत्र के बीच तक उत्सव संपन्न होता है। अंतिम दिन तीर्थवारि (पवित्र) स्नान की व्यवस्था भी थी। उक्त तीनों देवदान देवराय द्वारा पवित्र जल तर्पण तथा सुवर्ण दान के साथ हरि (विष्णु) को उत्थान द्वादशी पर दिये गये हैं। मान्यता है कि उत्थान द्वादशी के दिन पर भगवान विष्णु सृष्टि संरक्षण कार्य संपन्न करने जागते हैं। भगवान का शयन काल चार महीनों का होता है - आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया से आषाढ कृष्ण पक्ष (जून-जुलाई) तथा कार्तिक के शुक्ल पक्ष तक (अक्तूबर-नवंबर तक) का समय है। परिलेख के अनुसार यह 8 नवंबर, 1429 ई. ठहरता है (संख्या 192)।

देवराय - II के एक सैनिक पदाधिकारी तेप्पड़ नागेय नायक, मुद्देय नायक के पुत्र ने भगवान श्री वेंकटेश्वर का दर्शन किया। यह दुंधुभि नाम संवत्सर (शक संवत्सर 1364) में हुआ था। यह वर्ष 12, जनवरी सन् 1443 ई. में संपन्न हुआ था। उन्होंने 3000 होन्नु (पोन्नु = स्वर्ण मुद्राएँ) भगवान के लिए अर्पण (कानिके) किया था, तथा 100 स्वर्ण मुद्राएँ 'अमृतपडि' (पवित्र प्रसादम्) अर्पण के लिए था। इस अर्पण से चार फूल मालाएँ तथा आठ विविध प्रकार के वस्तु का भगवान के लिए समर्पण का प्रावधान था। 3000 सुवर्ण मुद्राओं के समर्पण में तीन छोटी थालियों को बनाकर भगवान को अर्पित करने का प्रावधान भी सूचित है (संख्या 209)।

अमात्यशेखर (मुख्यमंत्री) मल्लना (मल्लंडैयार - अन्य नाम माधवदास) उस समय चन्द्रगिरि राज्य के गवर्नर थे। ये देवरसर के पुत्र और गोपीनाथय्या के शिष्य थे। उन्होंने अविलाला ग्राम के तालाब की नाली का पुनरुद्धार कराया। इससे 5000 कुली की भूमि की सिंचाई होती रही। ऊबड - खाबड जमीन को समतल भी बनाया था। इससे भूमि उपजाऊ बनी। इन आमदनियों से हर दिन एक तिरुप्पोनकम का निवेदन भगवान श्री वेंकटेश्वर को सुलभतर हो गया। इतना ही नहीं उन्होंने अन्न प्रसाद समर्पण के लिए 82 गायों का देवदान भी दिया। उन्होंने गर्भालय में ज्योति प्रज्ज्वलन की व्यवस्था भी की। यह शक संवत्सर 1330 (सन् 13-3-1409 ई.) में घटित हुआ था (संख्या 194)। एक छोटे संस्कृत श्लोक (संख्या 195) में उक्त दोनों मल्लना के





समर्पण - नैवेद्यम् और नित्यदीपम् - उल्लिखित हैं। मल्लना ने चार विजयनगर राजाओं के यहाँ अपनी सेवाएँ संपन्न की - बुक्क देवराय - I से देवराय - II तक (Dev. Epi रिपोर्ट, पृ.134-135) फिर शक संवत्सर 1366 में (सन् 2-10-1444 ई.) उन्होंने पाडि गाँव के एक तालाब से संबद्ध नाली का पुनरुद्धार कराया था। इस से पुनः फसल की वृद्धि हुई। उससे दो संधि प्रसादों की उन्होंने अतिरिक्त व्यवस्था करायी। इसी बीच उन्होंने शक संवत्सर 1339 में तिरु-महामणि-मंटपम् का निर्माण कराया (यह गर्भगृह के सामने स्थित खुला मंडप है)। इनका समग्र समर्पण भगवान श्री वेंकटेश्वर को 25, अगस्त 1417 ई. में हुआ था (संख्या 196)। एक खण्डित परिलेख (संख्या 198) में असमग्र (खंडित) शब्दों से सूचनाएँ मिलती हैं - 'शिष्य होते हुए', 'श्री माधवदासर' 'आनंदविमानम्' 'संपन्न किया' 'पणम्'। इनसे यही सूचित होता है कि मल्लना ने 'आनंदविमान' से संबन्धित कुछ कार्य संपन्न कराया है। आनंदविमानम् से संबन्धित कुछ समुद्धरण कार्य और सोने का आलेपन हुआ होगा। पहली बार इसी समय में हम 'विमानम्' को ''आनंदविमानम्'' नाम से संबोधित पाते हैं।

पेरि मल्लयदेव महाराज ने 1000 पणम् का देवदान दिया है जिससे एक तिरुप्पोनकम् समर्पण का प्रवाधान हो सका है। पेरिमल्लयदेव महाराज एर्रकंपय देव महाराज के सुपुत्र थे। उनको सालुव वंशीय राजाओं के लिए प्राप्त विरुदाली भी मिली है - जैसे श्रीमान महामंडलेश्वर, मेदिनी मीसरगंड और कठारि सालुव। उनके द्वारा समर्पण शक संवत्सर 1368 (10 अक्तूबर 1446 ई., सं. 210) में हुआ है। (पृ.137-138 Dev. Epi रिपोर्ट)।

शक संवत्सर 1372 में (31, अगस्त 1450 ई.) एक और चालुक्य प्रधान मलगंगयदेव महाराज के पुत्र सिरुमल्लैयदेव महाराज ने 1200 नर्पणम् समर्पित किया था। यह भगवान श्री वेंकटेश्वर के लिए एक 'तिरुप्पोनकम्' प्रसाद समर्पण के लिए था जो उस रकम की ब्याज से संपन्न होता था। इन सब दानों के दाता हर रोज अपना ¼ भाग प्रसाद ले जा नहीं पाते थे। रायर-संधि प्रसाद सहित सब प्रसाद मंदिर के अधिकारियों और सेवकों में वितरित होते रहे थो रायर-संधि प्रसाद बुक्कराय - I से (संख्या 178) प्रदान किया गया था। उस समय से दाता के निमित्त अंश प्रसाद मंदिर के अधिकारियों एवं सेवकों में ही बाँटा जाता रहा है, कुछ अंश भक्त यात्रियों को भी (संख्या 128)। मिलता था।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।



श्री नाथमुनी स्वामीजी

- श्रीमती पूजा गौरव अग्रवाल

तनियन

नमः चिन्त्यादभुताक्लिष्ट ज्ञान वैराग्य राशये।

नाथायमुनयेगाध भगवद्भक्ति सिन्धवे।।

तिरुनक्षत्र - ज्येष्ठ मास, अनुराधा नक्षत्र; **अवतार स्थल** - श्री वीरनारायणपुरम; **आचार्य** - श्री शठकोप स्वामीजी; **शिष्य** - श्री नाथमुनी स्वामीजी के ग्यारह विख्यात शिष्य थे। इन सबों में श्री पुंडरीकाक्ष स्वामीजी, लक्ष्मीनाथाचार्य स्वामीजी, श्रीकृष्ण स्वामीजी, कुरुकानाथ स्वामीजी।

श्री नाथमुनी स्वामीजी वीरनारायणपुरम नामक नगर में ईश्वर भट्ट नामक किसी ब्राह्मण श्रेष्ठ के यहाँ उनके पुत्र रूप में कलियुग के तीन हजार चौबीस वर्षों के बीत जाने पर शोभकृत संवत्सर के ज्येष्ठ पूर्णिमा तिथि के दिन अनुराधा नक्षत्र में श्री विश्वक्सेन के अंश से श्री नाथमुनी का अवतार हुआ। श्री ईश्वर भट्टजी की भगवद्भक्ति उत्कृष्ट थी। श्री नाथमुनी स्वामीजी श्री राजगोपाल भगवान के सन्निकट में ही जाते और सेवा करते थे। एक दिन आपकी इच्छा हुई की आप भगवान के अवतार स्थल मथुरा, अयोध्या आदि स्थलों में जाकर उन स्थानों में विध्यमान श्री विग्रह के दर्शन करे। आपकी यह प्रार्थना सुनकर भगवान ने आपको जाने का आदेश दिया। भगवान की आज्ञा पाकर स्वामीजी वीरनारायणपुरम से उत्तर भारत के दिव्यदेशों, अभिमान देशों की यात्रा के लिए अपने पिता, पुत्र और अन्य कुटुम्ब सदस्यों के साथ मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन धाम, द्वारका, बद्रीनाथ, नैमिषारण्य इत्यादि दिव्यधामों के लिये प्रस्थान किए। यमुना नदी के तट पर स्थित गोवर्धनपुर गाँव, श्री नाथमुनी स्वामीजी को बहुत ही प्रभावित किया। यहाँ निवास करते हुए सकल कला कुशल, नटवर नागर, वेषधारी श्रीकृष्ण भगवान की नित्य सेवा करते थे। इसी बीच भगवान राजगोपाल ने एक दिन स्वप्न में दर्शन दिया कि तुम अब मेरी सन्निधि में चले आओ। फिर भगवान श्रीकृष्ण कि आज्ञा पाकर आप श्री वीरनारायणपुरम लौट जाते है।

श्री शठकोप सूरि विरचित श्री शारंगपानी विषयक दस गाथाओं को सुनकर प्रसन्नता का अनुभव करते हुए बोले कि इन गाथाओं का सतत पाठ करना चाहिए। तदनंतर सहस्त्रगीति की सभी गाथाओं को प्राप्त करने की मनोकामना भगवान से व्यक्त की। भगवान उन्हें ताम्रपर्णि नदी के तीर कुरुकानगरी में श्री शठकोप सूरि के सन्निधि से उसे प्राप्त करने की आज्ञा देते है। कुरुकानगरी में आप की मुलाकात श्री परांकुश दास स्वामीजी से होती है। श्री परांकुश दास स्वामीजी कहते है की अब इस भूमंडल पर उस सहस्त्रगीति की सिर्फ 10 गाथाएँ ही बची है बाकी सब लुप्त हो गई है। उन पाशुरों को प्राप्त करने का एक ही उपाय है। यदि आप 10 गाथाओं का बारह हजार बार श्री वकुलाभरण स्वामीजी के समक्ष बैठकर पाठ करें तो हो सकता है सूरि प्रसन्न होकर उस समस्त ग्रंथ को प्रदान कर दे। श्री परांकुश स्वामीजी के बताये हुए क्रम के अनुसार श्री नाथमुनी स्वामीजी पारायण प्रारंभ करते है। श्री नाथमुनी के इस पारायण से प्रसन्न होकर लक्ष्मीजी के पुरुषाकार से श्री शठकोप स्वामीजी प्रकट होकर अपना शिष्यत्व प्रदान कर उन्हें अष्टांग योग का परिपूर्ण ज्ञान और आळवार संतों द्वारा रचित 4000 दिव्यप्रबंध पाशुर अर्थ सहित प्रदान करते हैं।

श्री भविष्यदाचार्य स्वामीजी का श्री विग्रह सबसे पहले श्री शठकोप स्वामीजी ने श्री नाथमुनी स्वामीजी को ही प्रदान किया था। जिसके दर्शन हम आज भी श्री आल्वार तिरुनगरी में कर सकते है। श्री नाथमुनी स्वामीजी

दिव्यसंगीत के भी महा विद्वान थे। एक समय, उस गाँव के राजा एक साधारण और विशेष गायक के बीच कोई अंतर नहीं कर पा रहे थे। नाथमुनी स्वामीजी ने अति सरलता से अंतर पहचान कर इस समस्या को सुलझा दिया। राजा ने यह देख उसने नाथमुनी स्वामीजी की संगीत की प्रवीणता की परीक्षा लेनी चाही, तब नाथमुनी स्वामीजी जवाब देते है की, वह 4000 झांझों की सम्मिलित ध्वनि सुनकर, एक एक झांझ की ध्वनि और उसके वजन का अनुमान कर सकते हैं। यह सुन राजा को नाथमुनी स्वामीजी की संगीत में प्रवीणता समझ आती हैं, राजा नाथमुनि स्वामीजी को ढेर सारा धन देकर गौरवान्वित करते हैं। पर भौतिक सुखों को तुच्छ समझने वाले और सर्वथा अपरिग्रह का व्रत पालन करने वाले नाथमुनी स्वामीजी, इस धन संपत्ति के लिए कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते है और राजा को आशीर्वाद एवं धन्यवाद प्रदान कर भगवान राजगोपाल की सन्निधि में पधारते है।

अपने दिव्य ज्ञान, अपने अष्टांगयोग की साधना से भविष्य को देखते हुये, अपने पौत्र का आगमन देखते है, अपने पुत्र ईश्वर मुनि से कहते है कि उसका नाम यामुनाचार्य रखना (याने कृष्ण प्रेम के कारण यमुना नदी से संबन्धित)। और अपने शिष्यों से वचन मांगते है कि उसको सभी शास्त्रों का ज्ञान प्रदान कर शास्त्र ज्ञान में निपुण बनाना। अपना अंतिम समय निकट जान कर नाथमुनी स्वामीजी, आस-पास की परिसरों से विस्मरित हो भगवान राजगोपाल के ध्यान में निमग्न रहते थे। एक दिन उनसे मिलने राजा और रानी आते है। ध्यानमग्न स्वामीजी को देख, राजा और रानी लौट जाते है। प्रभु प्रेम, लगन और भक्ति में मग्न, नाथमुनी स्वामीजी को ऐसा आभास होता है की भगवान श्रीकृष्ण गोपियों के साथ आए और उनको ध्यानमग्न अवस्था में देखकर वापस लौट गये है, अपने इस आभास से दुःखी हो श्री नाथमुनी राजा और रानी की ओर दौड़ते है। अगली बार शिकार से लौटते हुए राजा, रानी, एक शिकारी, एक वानर के साथ उनसे मिलने के लिए आते हैं। इस बार भी नाथमुनी स्वामीजी को ध्यान मग्न देख, राजा फिर से लौट जाते हैं। नाथमुनीजी को इस बार यह लगता हैं की श्रीरामचन्द्र, माता सीता, लक्ष्मणजी और हनुमानजी उन्हें दर्शन देने पधारे हैं, पर उन्हें ध्यान मग्न देख लौट गये और इसी आभास में, नाथमुनी उनके दर्शन पाने उनके पीछे दौड़ते हैं। जब वह छवि उनकी आँखों से ओझल हो जाती हैं, भगवान से वियोग सहन न कर पाने के कारण नाथमुनी मूर्छित हो प्राणों को छोड़ देते हैं और परमपद प्राप्त कर लेते है। यह समाचार सुनकर तुरन्त ईश्वर मुनि, शिष्य बृंद के साथ वहाँ पहुँचते हैं और उनके अन्तिम चरम कैंकर्य करते है। नाथमुनी स्वामीजी के प्रयास से प्राप्त इन दिव्यप्रबंधों के कारण ही आज श्रीवैष्णव साम्प्रदाय का ऐश्वर्य हमें प्राप्त हुआ हैं। इनके बिना यह प्राप्त होना दुर्लभ था। श्री यामुनाचार्य स्वामीजी, (नाथमुनी स्वामीजी के पौत्र) अपने स्तोत्र रत्न में नाथमुनी स्वामीजी की प्रशंसा प्रारम्भ के तीन श्लोकों में करते है।

पहले श्लोक में बताते हैं की ''मैं उन नाथमुनी को प्रणाम करता हूँ'' जो अतुलनीय हैं, विलक्षण हैं और एम्पेरुमानार के अनुग्रह से अपरिमित ज्ञान भक्ति और वैराग्य के पात्र हैं।

दूसरे श्लोक में कहते हैं की ''मैं उन नाथमुनीजी के चरणकमलों का, इस भौतिक जगत और अलौकिक जगत में आश्रय लेता हूँ जिन्हें मधु नामक राक्षस को वध करने वाले (भगवान श्रीकृष्ण) के श्री पादकमलों पर परिपूर्ण आस्था, भक्ति और शरणागति ज्ञान हैं।''

तीसरी श्लोक में कहते हैं की ''मैं उन नाथमुनीजी की सेवा करता हूँ जिन्हें अच्युत के लिए असीमित प्रेम हो निजज्ञान के प्रतीक हैं, जो अमृत के सागर हैं, जो बद्ध जीवात्माओं के उज्जीवन के लिए प्रकट हुए हैं, जो भक्ति में निमग्न रहते हैं और जो योगियों के महाराजा हैं।

उनके अन्तिम और चौथे श्लोक में भगवान से विनती करते हैं की, उनकी उपलब्धियों को न देखकर, बल्कि उनके दादा श्री नाथमुनी स्वामीजी की उपलब्धियाँ और शरणागति देखकर मुझे अपनी तिरुवडी का दास स्वीकार कीजिए। इन चारों श्लोक से हमें नाथमुनी स्वामीजी के महान वैभव की जानकारी होती हैं।







तिरुमल में

ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव के अवसर पर वज्रकवच में श्री मलयप्पस्वामीजी

26-06-2026



तिरुमल में

ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव के अवसर पर मोतीकवच में श्री मलयप्पस्वामीजी

27-06-2026















तिरुमल में

ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव के अवसर पर स्वर्णकवच में श्री मलयप्पस्वामीजी

28-06-2026





दि.25-04-2026 से दि.27-04-2026 तक तिरुमल में श्री पद्मावती-श्रीनिवास का परिणय महोत्सव अत्यंत वैभव से संपन्न किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का ई.ओ. श्री एम.रविचंद्रा, आई.ए.एस., ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. श्री सी.एच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस., के साथ अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।



दि.23-04-2026 को तिरुपति में स्थित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर में पुष्पयाग महोत्सव को अत्यंत सुमनोहर रूप से संपन्न किया।



दि.25-04-2026 को आं.प्र. में स्थित ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर में श्री सीता जयंती उत्सव को संपन्न किया।



दि.23-04-2026 को तिरुमल में श्री भाष्याकारजी को 'श्रीगंधम् पोडि' उत्सव को अत्यंत वैभव से आयोजित किया।



दि.28-04-2026 को भारत देश के माननीय उपराष्ट्रपति श्री सी.पी.राधाकृष्णनूजी को चित्रपट देते हुए आं.प्र. के धर्मस्व शाखा मंत्री, ति.ति.दे. का ई.ओ., अतिरिक्त ई.ओ., सी.वी.अण्ड एस.ओ., ति.ति.दे. बोर्ड के अध्यक्ष और अन्य सदस्यगण ने भाग लिया।

मीरा का जीवन चित्रण और हिन्दी साहित्य में उनका स्थान



- डॉ.टी.पद्मजाराणी

हिन्दी साहित्य में गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई का स्थान उत्कृष्ट है। मीराबाई श्रीकृष्ण का भक्त है। सतत केवल भक्ति ही नही मीरा श्रीकृष्ण को अपना पति मानकर उन की पूजा करती है। श्रीकृष्ण उन केलिए केवल एक भगवान ही नही, भगवान श्रीकृष्ण उन के प्रेमिका है। उनके भजन में श्रीकृष्ण को नायक मानकर उनके प्रति अपना प्रेम, भक्ति और मैत्री भाव एवं उनकी विरह वेदना को प्रकट की है।



मीराबाई संवत 1555 वि. में मीराबाई का जन्म हुआ। इन के कोई संतान नही थी। इन की माँ की मृत्यु कुछ समय पश्चात ही हुयी। और दूदाजी ने मीराबाई को अपने पास बुला लिया। राव रत्नसिंह ने दूसरा ब्याह नही किया और संवत 1584 वि. में राणा साँगा के साथ युद्ध करते हुये वीरगति को प्राप्त हुए। रात में उसने एक स्वप्न देखा मीरा के एक पद में भी इस बात का उल्लेख आता है कि वे अपनी माँ से कहती है कि रात्रि को स्वप्न में उनका विवाह गिरिधर लाल से हो गया है।

संवत् 1572 वि. में राव दूदाजी का स्वर्गावास हो गया और वीरम देव मेड़ता के अधिकारी हुए। उन्होंने संवत् 1573 वि. में उन का ब्याह चितौड का राजा राणा साँगा के राजकुमार श्री भोजराज से हुआ। जब वे अपनी ससुराल जा रही थीं तो अपने आराध्य देव श्री गिरिधर लाल के स्वरूप को भी अपने साथ ही ले गई और वहाँ भी वे उन्ही की सेवा में रत रहने लगीं।

राणा साँगा की 28 रानियाँ थी। उनके सात पुत्र और चार कन्याएँ थी। सब से बडे पुत्र भोजराज थे, दूसरे कर्णसिंह, तीसरे रत्नसिंह, चौथे विक्रमादित्य, पाँच वे उदयसिंह, छठे पर्वतसिंह और सातवे कृष्णसिंह थे। मीरा के पति भोजराज की मृत्यु होने के बाद मीरा के पति निधन होने के बाद मीराबाई विधवा होगयी। उनके सती होने के लिए कहा गया, किंतु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इसके बाद वे दिन-रात भजन-कीर्तन और भगवद्-सेवा में लीन रहने लगी। संवत 1584 वि. में राणा रत्नसिंह गद्दी पर बैठे किंतु चार वर्ष बाद ही 1588 वि. में उनका भी स्वर्गवास हो गया। इस के पश्चात् विक्रमादित्य गद्दी पर बैठे। उन्हें मीरा का साधू समागम अच्छा नही लगता था। उन्होंने उन से इस के लिए मना भी किया किंतु उन्होंने नही माना। उन्होंने 'विष का प्याला' भेजा जिसे उन्होंने सहर्ष पान कर लिया। किंतु उनका कुछ भी असर नही हुआ।

संत 1596 वि. के लगभग माल देव ने मेड़ता छीन लिया और मीराबाई तीर्थयात्रा करने चली गयी। अंत में वे द्वारका जाकर रहने लगी, जहाँ संवत् 1603 वि. में उनका स्वर्गवास होगया।

मीराबाई का स्थान भगवान के भक्तों में विशिष्ट है। वे भक्ति संप्रदाय के प्रमुख गायिनी है।

नागादास कृत 'भक्त माल' संवत 1640 वि. में लिखा है कि कलियुग में मीराबाई ने द्वापर की गोपिका सद्रुश कृष्ण से प्रेम किया। दुष्टों ने उनके प्राण लेने को विष दिया। किंतु वह अमृत होगया।

राणा ने क्रोधित होकर विष का प्याला भेजा मीरा को। मीरा उस विष को पीकर नही मर गई। किसी ने राणा से चुगली की कि मीराबाई रात्रि में किसी पर-पुरुष से बात चीत किया करती है। राणा ने इनके पीछे गुप्तचर लगाये और उन्होंने



गिरिधर लाल से बात चीत करते देख इसकी खबर दी। राणा ने मारने गये और उन्होंने मीराबाई से पूछा कि वे किससे बात चीत कर रही थी, तो उन्होंने बता दिया कि वे गिरिधर लाल से बात चीत कर रही थी।

इसी प्रसंग में आगे लिखा है कि एक दुष्ट व्यक्ति ने साधू के वेश में आकर मीरा बाई से रतिदान माँगा। उन्होंने अपने उपास्य को साक्षी बनाकर साधु समाज के बीच पलंग डलवा दिया। और उससे पलंग पर आने को कहा। इससे वह बहुत ही लज्जित हुआ।

इसी कथा में लिखा है कि अकबर मीरा बाई के रूप सौंदर्य के बारे में कुछ बाते सुना। उन्हें देखकर अकबर खुश हुए। इस के अनंतर वृंदावन यात्रा में जीव गोस्वामी की स्त्री-मुख न देखने की प्रतिज्ञा यहाँ से वे द्वारका जाकर प्रतिज्ञा छुडाई यहाँ से वे द्वारका जाकर रहने लगी और राजा के बुलाने पर वे श्री रण छोडजी में लीन हो गयी। संत तुकाराम ने जन्म संवत् 1665 वि. एक अथंग में जन्म भक्तों के साथ मीरा के नाम का उल्लेख बडे सम्मान के साथ किया है।

वल्लभ कुल संप्रदाय के चौरासी वैष्णवों की वार्ता तथा दो सौ वामन वैष्णवों की वार्ता में भी तीन स्थानों पर इनका वर्णन है। चालीसवी वार्ता में गोविंद दूबे साचोरो ब्राह्मण का मीराबाई के घर ठहरने तथा श्री गुसाई जी द्वारा एक लिखित श्लोक पढकर लौट जाने की बात कही है। बावनवी बार्ता में मीराबाई के पुरोहित रामदास का श्री वल्लभाचार्य महाप्रभु विषयक पद गाना, उस को सुनकर मीरा का श्री ठाकुर जी के गुणानुवाद गाने को कहना तथा पुरोहितजी का मीराबाई से गुरु और गोविंद में द्वैत भाव होने के कारण चले जाने का उल्लेख है। बयासीवी वार्ता में श्रीकृष्ण दास अधिकारी का मीराबाई के आचार्य महा प्रभु के शिष्य न होने के कारण उन के यहाँ न ठहरने का वर्णन मिलता है।

श्री प्रपन्नामृतम्

(65वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड



(गतांक से)

श्री यतिराज के द्वारा 74 वाक्यों का उपदेश

यह सर्वविदित है कि परम-ऐश्वर्य सम्पन्न शेषरूप भगवान श्री रामानुजाचार्य के भूमण्डल में रहते हुए जीवन के एक सौ बीस वर्ष व्यतीत हो गये। उन्होंने सम्पूर्ण जड़-चेतनात्मक संसार भगवान श्री विष्णुमय है- इस वैदिक सिद्धान्त का दर्शन करवाया था। उनके वैदिक वचन अक्षरशः सत्य हैं। उन्होंने अपने जीवन के 60 वर्ष श्रीरंगम् में व्यतीत किये। बाकी वेंकटाद्रि कांची तथा भूतपुरी आदि भूमण्डल के अन्यान्य क्षेत्रों में बिताये थे। सेतुबन्ध रामेश्वर से हिमालय के महान भूमि पर्यन्त और पूर्व समुद्र से पश्चिम पर्यन्त कोई भी व्यक्ति ऐसा न था जो उनका शिष्य न हो। भगवान विष्णु की माया अज्ञानान्धकार से निवृत्त करने वाले महान् तत्वज्ञ भगवान श्री रामानुजाचार्य के चरणाश्रय को प्राप्त करके समस्त संसारियों ने मोक्ष प्राप्त कर लिया। वैकुण्ठ में यतिराज श्री रामानुजाचार्य के अभाव से वैकुण्ठनाथ को पुनः महान विचार उपस्थित हुआ।

एक बार श्री रामानुजाचार्य ने मन में सोचा कि वैकुण्ठनाथ की सेवा के निमित्त इस लीलाविभूति को त्यागकर मुझे अब वैकुण्ठधाम जाना चाहिए। उन्होंने भगवान श्रीरंगनाथ के पादारविन्दों में प्रपत्ति की। यतिराज श्री रामानुजाचार्य को प्रपत्ति करते हुए देखकर श्रीरंगनाथ भगवान बोले कि- ''तुमने अपने मन में क्या विचार किया है, कहो।'' भगवान की वाणी सुनकर यतिराज ने कहा कि- ''आपने पुरुषों की आयु सौ वर्ष की निर्णित की है, अतः मेरे जीवन का काल बीत गया।''

भगवान श्रीरंगनाथ ने यह सुनकर कहा कि- ''हे यतिराज! मैं ही काल का जनक हूँ। अतः तुम मेरी आज्ञा से कुछ काल तक भूमि पर रहते हुए माया से मुग्ध मनुष्यों की रक्षा करके मेरा कैंकर्य करते हुए यहीं सुखपूर्वक निवास करो।'' भगवान श्रीरंगनाथ से उपर्युक्त प्रकार से प्रार्थित होकर भी श्री यतिराज ने उनसे बारम्बार मोक्ष की ही याचना की। तब भगवान ने मोक्ष देना स्वीकार करते हुये उनसे कहा कि- ''वत्स! अब तुम इच्छित वर माँगो। मैं तुम्हें अभिलषित वर अवश्य प्रदान करूँगा।'' भगवान के वचन सुनकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने उनको

साष्टांग प्रणाम करके कहा कि- ''आपकी कृपा से मुझे जो लोक मिल रहा है, वही लोक मेरे शरणागति सम्बन्धी के सम्बन्धी की चरमावधि परम्परा के लोगों को भी आपकी आज्ञा से मिले।'' उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुये श्रीरंगनाथ भगवान शीघ्र ही उनको माला प्रसाद परिपट्ट (दुपट्टा) और शठारि दिलाकर बहुमान करवाया। तत्पश्चात् श्रीरंगनाथ भगवान की आज्ञा से परम कृपालु श्री यतिराज श्रीवैष्णवों से समावृत होकर अपने मठ में पधारे। यहाँ आने के बाद आपने सभी श्रीवैष्णवों को अपने समीप बुलाकर निम्नलिखित चौहत्तर वाक्यों का उपदेश देकर संसार का महान कल्याण किया।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य द्वारा शिष्यों को दिया गया 74 वाक्यों का उपदेश -

करुणासागर श्री यतिराज ने अपने श्रीवैष्णव शिष्यों से कहा कि-

1. अपने आचार्य एवं अन्य श्रीवैष्णव भागवत् दोनों का कैंकर्य समान भाव से करना चाहिये।
2. पूर्वाचार्यों में और उनके ग्रन्थों में विश्वास रखना चाहिए।
3. इन्द्रियों का दास बनकर नहीं रहना चाहिये।
4. सामान्य शास्त्रों में आग्रह बुद्धि नहीं रखनी चाहिये।
5. भगवद् विषयक शास्त्रों में ही रुचि रखनी चाहिये।
6. आचार्य चरणों की कृपा से यदि ज्ञान-सागर हृदय में लहरा उठे तो फिर भूलकर भी शब्द आदि विषयों का दास नहीं बनना चाहिये।
7. शब्दादि सभी विषयों को सामान्य दृष्टि से ही देखना चाहिये।
8. पुष्प, चन्दन, पान आदि में कभी भी वासनात्मक रुचि नहीं रखनी चाहिये।
9. भगवन्नाम संकीर्तन के समान ही भागवत नाम संकीर्तन भी करना चाहिये। यह सोचकर कि भागवतों के आश्रयण से ही भगवान की प्राप्ति होती है।
10. भागवतों के आदेश की पूर्णतः पालन करना चाहिये।
11. रागादि से प्रेरित होकर यदि अज्ञ मनुष्य भगवान का और भागवतों का कैंकर्य छोड़ेंगे तो वे विषयों में आसक्त होकर नष्ट हो जायेंगे।
12. श्रीवैष्णव स्वरूपानुष्ठान भगवत्प्राप्ति का उपाय न मानकर उपेय रूप समझना।
13. महाभागवतों को एकवचन से न बुलाना चाहिये।
14. श्रीवैष्णवों को देखते ही हाथ जोड़कर प्रणाम करें।
15. भगवान की एवं श्रीवैष्णवों की सन्निधि में पैर फैलाकर न बैठें।
16. भगवान श्रीवैष्णवों और गुरुदेव के स्थान की तरफ पैर फैलाकर न सोवें।
17. प्रातःकाल जगकर गुरु-परम्परा का अनुसन्धान करें।
18. भगवत्सन्निधि में बैठे हुये भागवतों को देखें, तब ''समस्त परिवार विशिष्टाय श्रीमते नारायणाय नमः'' कहकर साष्टांग करें।
19. भगवत् भागवतों का गुणानुवाद करते हुए श्रीवैष्णवों की यथाशक्ति पूजा किये बिना और प्रणाम के बिना चले जाना महान अपचार है।

20. श्रीवैष्णवों का आगमन सुनकर सन्मुख आगे बढ़कर स्वागत करना और जाते समय कुछ दूर साथ चलकर बहुमानपूर्वक विदा करना चाहिये, ऐसा न करने पर अपराध होता है।

21. आत्मा के उज्जीवन के लिये अपने को श्रीवैष्णवों का शेषभूत मानकर श्रद्धापूर्वक श्रीवैष्णव महात्माओं की आज्ञा का अनुसरण करते हुए शरीर पोषण कीजिये और लोगों के घर-घर भटकना और अपने नियमों को छोड़ना-यह ही अनाचार है तथा श्रीवैष्णव स्वरूप के लिय हानिकारक है।

22. भगवान के मन्दिरों, गोपुरों एवं विमानों को देखकर हाथ जोड़े तथा अन्य देवताओं के विमानों को देखकर आश्चर्य न करें।

23. देवतान्तर की महिमा सुनकर विस्मत न हों।

24. भगवत् भागवत महिमा वर्णन करते हुए पुण्य पुरुषों को देखकर आनन्दित होना चाहिये।

25. किसी श्रीवैष्णव की छाया का उल्लंघन न करें।

26. अपने देह की छाया भी श्रीवैष्णवों पर न पड़ने दें।

27. इतर (अन्य) लोगों का स्पर्श करने के बाद श्रीवैष्णवों को स्पर्श न करें।

28. दरिद्र श्रीवैष्णव के अभिवादन का प्रत्युत्तर न देना भागवत अपचार है।

29. 'मैं दास हूँ' ऐसा कहकर प्रणाम करने वाले श्रीवैष्णव का आदर करना चाहिये। अनादर करना महान अपचार है।

30. श्रीवैष्णवों के जन्म, कुल और आलस्यादि का निरूपण नहीं करना चाहिये।

31. श्रीवैष्णवों के दोषों को देखे बिना गुणों की ही चर्चा करनी चाहिये।

32. सामान्यजनों के सन्मुख भगवान का तीर्थ और भागवतों का श्री पादतीर्थ नहीं लेना चाहिये।

33. तत्वत्रय एवं रहस्यत्रय को नहीं जानने वालों का तीर्थ नहीं लेना चाहिये।

34. ज्ञानी एवं सदाचारी श्रीवैष्णव का श्री पादतीर्थ प्रयत्नपूर्वक लेना चाहिये।

35. भागवतों एवं मुझ (यतिराज) में समबुद्धि नहीं रखनी चाहिये।

36. यदि भूल से भी प्राकृत लोगों का स्पर्श हो जाये तो वस्त्रों सहित स्नान करके श्रीवैष्णवों का श्री पादतीर्थ ग्रहण करना चाहिये।

37. भक्ति, ज्ञान, वैराग्य सम्पन्न महात्माओं को नित्यसूरि के समान मानकर उनमें विश्वास करना चाहिये।

38. ज्ञान, भक्ति, वैराग्य सम्पन्न श्रीवैष्णवों, महात्माओं में प्रेम बढ़ाना चाहिये।

39. प्राकृत लोगों के घर पर भगवान का तीर्थ नहीं लेना चाहिये।

40. प्राकृत लोगों के घरों में स्थित भगवान के विग्रह की सेवा नहीं करनी चाहिये।

41. भगवान के दिव्य देशों में साधारण जन के देखने पर भी तीर्थ प्रसाद ग्रहण करो क्योंकि दिव्य देशों में दृष्टिदोष नहीं माना जाता।

42. ''दास ने आज एकादशी व्रत किया है।'' ऐसा कहकर भगवान की सन्निधि में भागवतों के द्वारा दिये गये गोष्ठी प्रसाद का त्याग नहीं करना चाहिये।

43. समस्त पापों को नष्ट करनेवाले भगवत्प्रसाद में कभी उच्छिष्ट भावना नहीं रखनी चाहिये।

44. कभी भी श्रीवैष्णवों के सामने अपनी प्रशंसा न करें। नित्य नैच्यानुसंधान रत रहें।

45. श्रीवैष्णवों की सन्निधि में किसी का तिरस्कार न करें।

46. श्रीवैष्णव महात्माओं के गुणों का अनुभव तथा उनकी सेवा क्षण भर किये बिना कोई कार्य न करें।

47. दिन में एक घड़ी भी अपने आचार्य के गुणों का अनुसन्धान करना चाहिये।

48. दिन भर में एक घड़ी भी दिव्य सूरियों के प्रबन्धों का अनुसन्धान करना चाहिये।

49. प्रतिदिन कम से कम एक घड़ी अपने आचार्यदेव के गुणों का अनुसन्धान करना चाहिये।

50. देहाभिमानी जनों का संग न करें।

51. शंख, चक्राकिंत होने पर भी विषयातुर एवं लम्पट व्यक्तियों का संग कदापि न करें।

52. पर छिद्रान्वेषी जनों से वार्तालाप न करें।

53. संयोगवश देवतान्तरों के भक्तों का संग हो जाय तो, उस दोष की निवृत्ति के लिये महाभाग्यशाली श्रीवैष्णवों का संग करें।

54. भगवान के भक्तों के निन्दकजनों को कभी भी न देखें।

55. आचार्यद्वेषी लोगों को भी कभी नहीं देखना चाहिये।

56. द्वयमन्त्र में निष्ठावाले पुरुषों का सहवास करें।

57. उपायान्तर में जिनकी निष्ठा हो ऐसे व्यक्तियों का संग त्यागना चाहिये।

58. प्रपत्ति में जिनकी निष्ठा हो उनका सहवास करना चाहिये।

59. रहस्यत्रय एवं तत्वत्रय के मर्मज्ञ महाभागवतों का सदा संग करें।

60. अर्थ और काम में तत्पर रहने वालों के साथ कभी भी न रहना चाहिये। भगवान भक्ति में श्रद्धा रखने वालों का साथ करना चाहिये।

61. यदि किसी श्रीवैष्णव के द्वारा आपका तिरस्कार भी हो जाये तो बुरा न मानकर मौन रहना चाहिये और उसे याद न रखना चाहिये।

62. श्रीवैष्णवों की इच्छा परम पद में प्रकट हुई थी यह जानकर श्रीवैष्णवों की निरन्तर ही भलाई करें।

63. धर्मविरुद्ध महाफल देने वाले कर्म को भी बुद्धिमान न करें, क्योंकि वह अहितकर होता है।

64. भगवान को समर्पित किये बिना, अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिये।

65. उपायान्तर से बिना मांगे न मिलने वाली कोई भी वस्तु स्वीकार न करें।

66. पुष्प, चन्दन, पान, फल, वस्त्र, जल आदि भी भगवान के समर्पित किये बिना ग्रहण न करें।

67. जातिदुष्ट, निमित्तदूष्ट और आश्रयदुष्ट अन्न भगवान को समर्पित न करें।

68. अपनी रुचि के लिये अपने को प्रिय पदार्थ का परमात्मा को भोग लगावें। शास्त्रानुसार ही पदार्थों का भगवान को भोग लगावें।

69. भगवान के समर्पित अन्न, जल, फल आदि में सदा प्रसाद बुद्धि रखनी चाहिये, भोग बृद्धि कभी भी न रखे।

70. भागवतापचार ही अपना नाश एवं भगवन्मुखोल्लास ही अपनी उन्नति है।

71. मन्त्रत्रय (मूल, द्वय, चरम) इन तीनों, मन्त्रार्थ में पूर्ण निष्ठा रखने वाले महाभागवतों के शास्त्रीय कर्मों को कैंकर्य बुद्धि से सम्पन्न करें।

72. भागवतों की पूजा से बढ़कर पुरुषार्थ नहीं और भागवत द्वेष से बढ़कर आत्मनाश नहीं।

73. अर्चावतार भगवान में शिला बुद्धि, आचार्यदेव में मानव बुद्धि श्रीवैष्णवों में उनकी जाति की भावना, भगवान के तीर्थ में और श्रीवैष्णवों के श्री पादतीर्थ में सामान्य जल की भावना दोषों के दूर करने वाले सिद्ध नाममन्त्र में सामान्य शब्दों की बुद्धि रचना और सर्वेश्वर भगवान में अन्य देवों की समानता मानना, यह सब नरक में डालने वाले महा पातक है और भगवत्, भागवत, आचार्य के अपचार है।

74. भागवत पूजा भगवत् पूजा से श्रेष्ठ हैं। भगवान के अपमान से भागवतों का तिरस्कार अधिक पापजनक हैं। भागवतों का श्री पादतीर्थ भगवान के चरणोदक से उत्तम है अतः आलस्य रहित होकर भागवतों की आराधना में तत्पर रहना चाहिये।

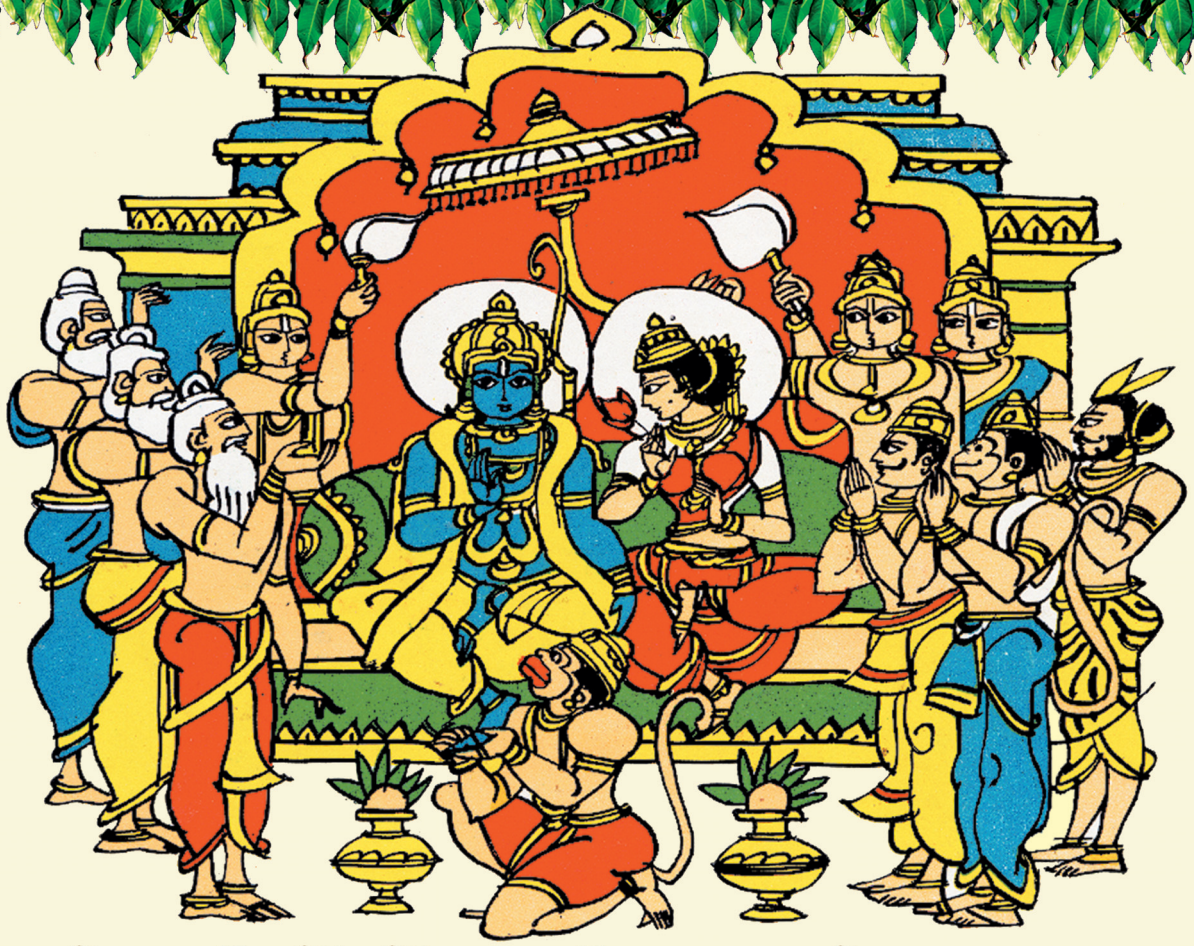
।। श्री प्रपन्नामृत का 65वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको अवश्य ध्यान रखें।

- तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा "गोविंदा" का उच्चारण करें।
- तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम्, आकाशगंगा पवित्र तीर्थों तथा अंजनाद्रि आंजनेय (हनुमान) मंदिर को दर्शन करें।
- तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।



लोकगीतों में मर्यादा पुरुषोत्तम राम

- डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

प्रत्येक दम्पति को पुत्रप्राप्ति की अभिलाषा होती है। अनेक लौकिक और पारलौकिक कृत्यों के सम्पादन में पुत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यज्ञ की पूर्णाहुति पुत्र ही करता है। इसके अतिरिक्त मातृत्व का विकास भी गोदी में किलकारी भरता हुआ शिशु ही पूरा करता है। कौशल्या पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा से गंगास्नान करती हैं। उन्हें विश्वास है कि गंगा माता उनकी सूनी गोद को अवश्य भर देंगी।

पुत्रहीनता के अभिशाप से बचने के लिए राजा दशरथ योगी होना चाहते हैं। पति के साथ पत्नी भी योगिनी हो जायेगी। पुत्र हीनता के कलंक से बचने के लिए वह काष्ठकार से एक काष्ठ का शिशु बनवा लेती है पर वह काष्ठ का शिशु बाल सुलभ क्रीड़ायें करके माता के हृदय में ममत्व के भावों का जागरण नहीं कर पाता। ऐसे शिशु की माता के समक्ष क्या-उपयोगिता।

राम ही राम पुकारीला, राम नांही बोलई हो।

रानी कौशल्या भी सास, ससुर, ननंद आदि सभी। परिजनों की सेवा करन को इच्छुक हैं शायद किसी के आशीर्वाद से ही उनकी सूनी गोद भर जाये। विषय वासना की अपेक्षा स्त्रियों में माँ बनने की अधिक आकांक्षा होती है।

राजा दशरथ अपनी वृद्धावस्था को देखकर दुःखी होते है कि अब उनके परिवार का नाम भी उनके साथ समाप्त हो जायेगा। व्यथित मानवजी शरण में जाकर शान्ति का अनुभव व राजा दशरथ ध्यानमग्न हो गये। एक तपस्वी ने उनको पिता होने का आशीर्वाद देकर उनके

हृदय को हर्ष से भर दिया। उनके घर में पुत्र-जन्म ने चतुर्दिक् उमंगें बिखेर दी।

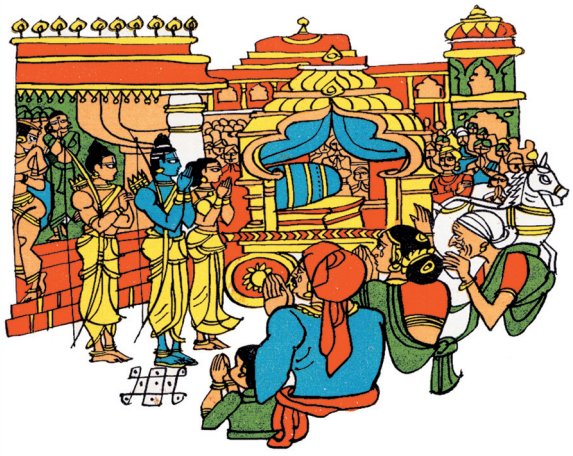
होत विहान लोहि फाटत होरिल जनम लिहे, रामजनम लिहे।
बाजै लागी आनंद बधइया गावै सखि सोहर हो।

माता-पिता अपने शिशु का उज्वल भविष्य जानने को इच्छुक होते है अतएव वे ज्योतिषियों से शिशु के भविष्य को जानने की अभिलाषा से उसकी जन्मकुण्डली बनवाते है पर दशरथ को बारह वर्ष के उपरान्त राम के वनवास जाने का ज्ञान प्राप्त होता है तब वे ज्योतिषी पर अपना क्रोध उगल पड़ते हैं परन्तु इसमें उसका क्या दोष? भावी किसी के टाले नहीं टलती -

बामेंना के पूत जौन होतेउ त जियरा भरवतेउं।
मोरि इतनी तपस्या के राम त बन के सुनायेंउ।।

सामाजिक दृष्टि से भाई का सम्बन्ध परिवार में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है अतः राम अपने अनुज को कष्ट नहीं देना चाहते यहाँ तक कि उनको अपनी बारात में भी नहीं ले जाना चाहते क्योंकि जनकपुर तक पहुँचने में उनको अनेक कटिनाइयों का सामना करना पड़ेगा -

बेरिआ कि बेरिआ तोइह बरजेंउ लछुमन,
हमरी बरातन जिर्वि जाहु।



हमरी बरतिया बहुत दिना लागिहैं,
मरिजावे भुखिया पिआसि।।

वह भाई कैसा जो अपने भाई के लिए कष्टों का वरण न कर सके। लक्ष्मण कब पीछे हटने वाले थे? वह अनेक विघ्न-बाधाओं को झेलते हुए राम की बारात में चलकर अपनी प्रिय और आदरणीय भौजाई को अवश्य लायेंगे -

सहवइ भइया मुखिया पिआसिया,
सहवइ धुमरी और धम्म।
सीता अइसी भउजी विआहि लइअइवइ,
देखबई जनक कह दुआर।

'अतिथि देवो भव' भारतीय संस्कृति का मूल है। द्वार आये अतिथि की सेवा सत्कार ईश्वर की सेवा सत्कार मानी गई है। द्वार पर बारात के स्वागत-सत्कार में सम्पूर्ण जनकपुरी व्यस्त दिखाई दे रही है। पत्नी पति के साथ रहकर सम्पूर्ण दुःखों को भूल जाती है। पति ही उसका प्राणाधार होता है। वन जाते राम को सीता कैसे अकेले छोड सकती है? पति के बिना विश्व शून्य और सारहीन होता है। पारिवारिक जीवन में रूठना और मनाना तो चला ही करता है। पति-पत्नी के परस्पर रुठने में भी प्रेम की झलक दिखाई देती है। राम से रुष्ट होकर सीता कहती है कि हे पति देव! तुमने कभी हंसकर मेरा आंचल नहीं पकड़ा-

काह राम तोहरे घराँ रहै काह विदेश गए हो।
राम हसिकेन धरेउ अचरयों न कबहूँ कोहानेउ।।

राम बन जाने को प्रस्तुत है वे कौशल्या से पूछते हैं कि वह घर पर सीता को किस प्रकार रखेंगी? इस पर कौशल्या ने अत्यन्त भावपूर्ण उत्तर देकर राम की जिज्ञासा को शान्त कर दिया -

आंगन कुइयाँ खुदैवे सितहिं नहवैवइ।
बेटा! खांड चिरौंजी खबइबइ हिरदय बीच रीखबइ।।

सीता इनके वैभवपूर्ण खाद्य पदार्थों की अपेक्षा पति का सामीप्य अधिक सुखकर समझती हैं। अनेक कष्टों को वह सहर्ष झेल लेंगी पर पति से एक क्षण पृथक होना असहनीय है। अतः वह राजसी वैभव को तिलांजलि देती हुई वन में पति के

साथ रहकर प्रत्येक कष्ट को सहर्ष सहन करने को प्रस्तुत हैं। पत्नी के सम्मान एवं भरण पोषण का दयित्व पति पर होता है। जिस प्रकार पत्नी-पति के बिना अधूरी होती है उसी प्रकार पति भी पत्नी के बिना अपूर्ण होता है। जब राम वन में सीता की इच्छानुसार मृग की छाल लेने चले जाते हैं तब वे सीता को लक्ष्मण के सुपुर्द कर जाते हैं परन्तु दैवयोग से लक्ष्मण को भी सीता को अकेला छोड़कर जाना पड़ता है। यति के भेष में आकर रावण छल-प्रपंच से सीता का अपहरण करता है। नारी अपने स्वभाव के अनुकूल याचक को द्वार से निराश नहीं लौटा सकती। सीता के द्वार पर याचक निराश लौट जाये यह असम्भव है -

जोगिआ भेलस धरके आया हइ रावनवा,
बइठा हइ आसन मानि।

रावण बोला -

जे कहु होइ यहि गोडिला के भीतर,
जोगिआ के भीख दइ देइ।

गृहलक्ष्मी गृह में अकेले होने पर भी पैरों के नीचे स्वर्ण उसके ऊपर तिल तथा चावल रखकर यति को भिक्षा देती हुई बोली, 'भिक्षा ले लीजिए बाबा जी!' रावण ने सीता जी द्वारा प्रदान की जा रही भिक्षा को यह कहकर लेने से इनकार कर दिया कि यदि वह वास्तव में भिक्षा देने को इच्छुक हैं तो रेखा से बाहर आकर भिक्षा दें। सीता जी अभी पूर्णरूप से रेखा के बाहर निकल भी न पायीं थीं कि रावण उन्हें उठाकर रथ में बैठाकर आकाश मार्ग से लंका की ओर चल पड़ा-

एक पाउं सीता थरी गोड़िला के बाहेर,
दुसर गोड़िला के बीच।
तीसरा पाउं सीता धरइन पाइनि,
लइगा रथ बैठाइ।

ननद-भावज का परस्पर द्वेष पूर्ण भाव लोकगीतों का सामाजिक आधार रहा है? ननद भावज से प्रत्येक वस्तु को प्राप्त करने की कामना करती है। हास्य-परिहास से कभी उसका मन शीतल कर देती है तो कभी व्यंग्य बाण अथवा कूटनीति कर कलह का कारण भी बन जाती है। ननद अपने भाई से भावज की शिकायत करने अपनी भावना की व्यक्त कर देती है -

जेवन बैठे सिरी राम बहिनि लोनी लगाइन।
भइया जौन रावन तोर बैरी त भउजी उरे हैं।।

बहन की इस शिकायत को सुनकर भाई का रुष्ट होना स्वाभाविक है। राम सीता के इस कृत्य पर प्रतिशोध करते हुए लक्ष्मण से सीता को वन में भेज देने का आदेश देते हैं। लक्ष्मण जिन्होंने अपने भाई के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था, भाई की आज्ञा को कैसे टाल सकते थे? परन्तु लक्ष्मण यह भी नहीं चाहते थे कि निर्दोष सीता को घर से निकाल दिया जाये। गर्भवती भावज जंगल में अनेक कष्टों को कैसे झेल सकेगी? पर भाई के आदेश की अवहेलना भी तो नहीं कर सकते। अतः वे सीता जी को जंगल की ओर ले चले। लक्ष्मण कर्तव्य और प्रेम के निर्वाह में व्यस्त थे। मार्ग में सीता को प्यास लगने पर एक वृक्ष के नीचे बैठाकर स्वयं जल लेने के लिए चले गये। सुकुमार सीता भूमि पर प्यार से व्याकुल होकर लेट गई। अत्यधिक थकावट के कारण वह सो गयीं। लक्ष्मण जल लेकर आ गये। व्यथित भावज को सुप्तावस्था में छोड़कर भाई के पास चल दिये -

तोरिन पतवा कदम दोनवां बनाइन।
टॉगिन लंवगिया कै ठैरिया लछन चलै घर के।।

जगने पर एक वृक्ष की डाल पर पते के दोने से टपकती बूँदों को देखकर सीता जी विलाप करने लगी। अब क्या होगा? शिशु-जन्म पर कौन उत्सव मनायेगा? कौन नाल काटेगा?

सहानुभूति और सांत्वना एक ऐसा शस्त्र है जो जीवन का सम्बल बनता है। वन ऐसे निर्जन स्थान में कौन सहानुभूति व्यक्त करेगा? सीता के विलाप को सुनकर तपस्विनियाँ आ गयीं। उन्होंने



सीता को सान्त्वना देते हुए कहा कि वे प्रत्येक कष्ट में समभागी होंगी। वे उनकी लट खोलेंगी और जन्म पर उनके बच्चे की नाल भी काटेगी -

सीता हम तोरे आगे पीछे बैठय हम लट छोरब।
हम तोरी जगबै रयनिया त नरवा छिनउथे।।

नारी बड़े से बड़े दुःख में भी अपने स्वाभिमान की रक्षा करती है। स्वाभिमान का बलिदान करके उसने जीना नहीं सीखा। पुत्र-जन्म पर सीता वन के नाई के द्वारा अयोध्या में रोचना भेजकर कहती हैं कि पहला रोचना ससुर दशरथ को दूसरा सास कौशल्या को और तीसरा देवर लक्ष्मण को देना परन्तु पति राम को न बताना -

पहिलै दिहौ राजा दशरथ दुसरे कौसिल्या रानी।
तीसरै रोचना लछिमन देवरा पै पिउ न जनायउ।।

भारतीय संस्कृति ने पत्नी के बिना धार्मिक एवं सामाजिक अनुष्ठानों को अपूर्ण कहा है। अश्वमेध यज्ञ सीता के बिना अधूरा था। राम को विश्वास था कि सीता स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति है। वह उनके द्वारा बुलाने पर नहीं आयेगी पर गुरु के आदेश को टालना उनकी सामर्थ से परे है। सीता लक्ष्मण के साथ गुरु वशिष्ठ को आता देखकर सम्मान भाव से उठ खड़ी गुरु वशिष्ठ के वापस आ जाने पर पश्चात्ताप करते हुए राम सोचने लगे कि सीता की वापस लाने के लिए स्वयं उनको ही जाना चाहिए। राम वन-वन में भटकने लगे, पर सीता का कही पता न चला। राम की व्याकुलता की पराकाष्ठा हो गई। राम ने वन में एक स्थान पर दो सुन्दर शिशुओं को क्रीड़ा करते हुए देखा। शिशुओं की आकृति राजकुमारों जैसी प्रतीत हो रही। राम उन पर मुग्ध होकर उनसे उनका परिचय प्राप्त करने लगे। राम के पूछने पर शिशुओं ने जो महत्वपूर्ण जानकारी दी उससे राम का हृदय हर्ष से भर गया पर दूसरी ओर पिता का परिचय न पाकर अश्रु ते स्वतः नेत्रों का मोह त्यागकर फूट ही पड़ें -

बाप का नौवां न जानौ लखन के भतिजवा हों।
हम राजा जनक के हैं नतिया सीता के दुलरुआ हो।।

इस प्रसंग की मार्मिकता भावुक हृदय ही समझ सकता है। राम के सम्मुख एक ओर अपनी प्रजा के प्रति कर्तव्य और दूसरी ओर पत्नी सीता के प्रति प्रेम का भाव दोनों के मध्य से मार्ग की खोज करना सरल न था। राजा को प्रजा की इच्छाओं को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत इच्छाओं का बलिदान करना पड़ता है। राम ने यही किया। सीता के बिना राम का गृह शून्य था वैसे भी पत्नी के बिना घर शून्य होता है। अतः राम सीता से घर चलने का अनुरोध करते हैं। राम को देखते ही सीता की मनोभावनाएँ पुनः उन्हें खुरेदने लगी कि पति के समक्ष जीवन का परित्याग पत्नी को भाग्य से प्राप्त होता है अतः पृथ्वी माता ने जिन्होंने जन्म दिया था, आराधना सुनकर उन्हें अपनी गोदी में सदा के लिए आत्मसात कर किया -

सीता आँखियाँ माँ भर ली विरोग एकटक देखिन।
सीता धरती माँ गई समाय कही गट्ठी बोलिन।।

इस प्रकार लोक जीवन में प्रचलित लोकगीत राम के जीवन से सम्बंधित अनेक घटनाओं का भावात्मक चित्रण प्रस्तुत करते हैं। इन गीतों ने जनमानस पर एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी है जो निरन्तर चलती रहेगी।

हरिदास परंपरा की भक्तिनों में हरप्पनहळ्ळी भीमव्वा

- डॉ.मैथिली प्र.राव

नारदादाप्त सद्बोधाम - साध्वी साहित्य कारिणीम।
भीमेश कृष्णा निरतां - वन्दे भीमव्व मातरम।।

अपने पिछले आलेख में मैंने हरिदास परंपरा की एक प्रमुख भक्तिन हेळवनकट्टे गिरियम्मा का परिचय दिया था। इसी परंपरा में एक और सशक्त स्वर हैं - हरप्पनहळ्ळी भीमव्वा। उन्हें 'अव्वनवारु' के नाम से भी जाना जाता है। भीमव्वा का जीवन भी बहुत ही संघर्षशील एवं भक्ति अत्यंत सरल परंतु शक्तिशाली थी।

भक्तिनें : भारत में नारीवाद की अग्रदूत

भारतीय नारीवाद की जड़ों को खंगालते हुए हम भक्ति काल की उन महिलाओं तक पहुँचते हैं जिन्होंने अपने गीतों, कविताओं और जीवन-शैली के माध्यम से ब्राह्मणवादी पितृसत्ता को चुनौती दी। ऐसे समय में जब अधिकांश सामाजिक दायरे महिलाओं के लिए वर्जित थे, उन्होंने भक्ति को अपनाकर अपने स्वयं के सत्य को परिभाषित किया, और समाज, राजनीति, संबंधों तथा धार्मिक परंपराओं एवं चिंतन में परिवर्तन लाने का प्रयास किया। उन्होंने समाज के सभी नियमों और रूढ़ियों को तोडा और अपने नियमों के आधार पर अपना जीवन व्यतीत किया।

'टॉकिंग टू गॉड' में ए.के.रामानुजन कहते हैं, ''भक्ति आंदोलनों में, महिलाएँ उन गुणों को अपना लेती हैं जो पारंपरिक रूप से पुरुषों के माने जाते हैं। वे मनु के उन नियमों को तोड़ती हैं जो उन्हें ऐसा करने से रोकते हैं। उदाहरण के लिए, एक 'संभ्रांत' महिला को अकेले रहने, घर से बाहर निकलने, या अपने पति के साथ शारीरिक संबंध बनाने से इनकार करने की अनुमति नहीं होती - लेकिन महिला संतें अकेले ही विचरण करती हैं, यात्राएँ करती हैं, और अपने पति, बच्चों तथा परिवार का त्याग कर देती हैं।''

महिला संतों ने ऐसी कविताएँ और गीत रचे जिनमें उन्होंने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त किया-उस ईश्वर के प्रति जो उनके प्रेमी, पति या जीवनसाथी के समान था-और साथ ही उन्होंने अपने ऊपर हो रहे उत्पीड़न तथा स्वतंत्रता की अपनी अभिलाषाओं को भी अभिव्यक्त किया। उन्होंने न केवल अपने पतियों की 'ईश्वर-तुल्य' स्थिति को चुनौती दी, बल्कि अपनी मातृत्व-भूमिका और परिवार का भी त्याग कर दिया। इस दृष्टि से, भक्ति का अर्थ महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग था। जहाँ एक पुरुष भक्त अपने चुने हुए मार्ग पर चलते हुए भी गृहस्थ जीवन व्यतीत कर सकता था, वहीं महिलाओं के लिए ऐसा करना संभव नहीं था। अधिकांश महिलाओं को अपनी भक्ति और अपने वैवाहिक तथा घरेलू जीवन में से किसी एक को चुनना पड़ता था। इनमें से कई महिलाएँ अपने चुने हुए मार्ग पर तभी आगे बढ़ पाईं, जब उन्होंने अपने वैवाहिक बंधनों को पूरी तरह से त्याग दिया।

हरप्पनहळ्ळी भीमव्वा के समय में विधवाओं की स्थिति

1823 में, भारत में हिंदू विधवाओं की स्थिति गंबीर सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक पाबंदियों से भरी थी, जिसके कारण अक्सर उन्हें दुख भरा जीवन जीना पड़ता था और कुछ स्थानों में सति प्रथा भी प्रचलित थी। जहाँ एक तरफ राजा राम मोहन राय जैसे सामाजिक सुधारक इन स्थितियों के खिलाफ ज़ोरदार विरोध कर रहे थे, वहीं सती

प्रथा अभी भी कानूनी थी, और इस पर कानूनी रोक 1829 तक नहीं लगाई गई थी।

1823 में विधवा जीवन के मुख्य पहलू

सामाजिक बहिष्कार : विधवाओं को अक्सर 'बदकिस्मत' या 'अपशकुनी' माना जाता था और उन्हें पारिवारिक समारोहों, शुभ अनुष्ठानों और त्योहारों से दूर रखा जाता था।

शारीरिक तपस्या : विधवाओं के लिए बहुत ही संयमित जीवन जीना जरूरी था, जिसमें सादी, खुरदरी, सफ़ेद साड़ियाँ पहनना, सिर मुंडवाना, रंगीन कपड़े न पहनना और सादा भोजन करना (अक्सर दिन में सिर्फ़ एक बार खाना) शामिल था।

सती प्रथा : कुछ क्षेत्रों और समुदायों में, खासकर बंगाल के उच्च-जाति के हिंदुओं में, विधवाओं से यह उम्मीद की जाती थी कि वे अपने पति की चिता पर खुद को जला लें। 1823 में, ब्रिटिश संसद और भारतीय समाज में इस प्रथा को लेकर बहस चल रही थी; कुछ लोगों का तर्क था कि इसमें दखल देना जरूरी है, जबकि दूसरों को डर था कि इससे यह प्रथा और बढ़ जाएगी।

पुनर्विवाह की मनाही : विधवाओं के पुनर्विवाह पर रोक थी, खासकर उच्च-जाति के हिंदुओं में, जिसके कारण कम उम्र की विधवाओं को अकेले ही रहना पड़ता था। उन्हें तंग और अंधेरी कोठरियों में रहना पडता और पति की मृत्यु के साथ तो उनका जीवन ही समाप्त होने के समान था।

आर्थिक निर्भरता : विधवाओं को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता था; वे अक्सर अपने ससुराल वालों पर निर्भर हो जाती थीं और अपने पति की संपत्ति पर भी अधिकार नहीं होता था।

हरप्पनहळ्ळी भीमव्वा के समय में कर्नाटक

हरप्पनहळ्ळी भीमव्वा का जन्म 6 जुलाई, 1823 को हुआ अतः हमारे लिए यह समझना अनिवार्य हो जाता है कि उस समय कर्नाटक की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति कैसी थी।

1823 में कर्नाटक में, शुरुआती ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और रियासती मैसूर के तहत, महिलाओं को सख्त पितृसत्तात्मक बंधनों का सामना करना पड़ता था। उनकी स्थिति आमतौर पर घरेलू भूमिकाओं, कम साक्षरता और बाल विवाह तथा विधवापन पर लगी पाबंदियों जैसी सामाजिक बुराइयों से तय होती थी। कृषि कार्यों में कुछ आर्थिक भागीदारी के बावजूद, उच्च जाति की महिलाओं को गंभीर सीमाओं का सामना करना पड़ता था; उनकी शिक्षा सीमित थी और उन्हें संपत्ति का कोई अधिकार नहीं था। जाति के आधार पर विभाजित समाज में उच्च जाति (विशेषकर ब्राह्मण) की महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में अपनी उपस्थिति को लेकर अधिक पाबंदियों का सामना करना पड़ता था।

कम उम्र में विवाह आम बात थी, जिसके कारण अक्सर कम उम्र की लड़कियाँ विधवा हो जाती थीं। जहाँ उच्च जातियाँ लिंग-संबंधी कठोर नियमों का पालन करती थीं। महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा सीमित थी। महिलाओं के पास आमतौर पर संपत्ति के स्वामित्व का कोई अधिकार नहीं होता था, जिससे परिवार के पुरुष सदस्यों पर पूर्णतः निर्भर होती थीं। विधवाओं को अक्सर अशुभ माना जाता था और उन्हें एक दयनीय तथा पाबंदियों से भरा जीवन जीना पड़ता था। अनेक क्षेत्रों में, विशेष रूप से तटीय क्षेत्रों और पुराने मैसूर के कुछ हिस्सों में, देवदासी प्रथा (मंदिरों को समर्पित करने की प्रथा) सक्रिय थी।

19वीं सदी की शुरुआत कर्नाटक के लिए एक संक्रमण काल था। यद्यपि उस समय में पारंपरिक रस्में महिलाओं के जीवन को पूरी तरह से नियंत्रित करती थीं, तथापि ब्रिटिश प्रशासन की शुरुआत के साथ-साथ सामाजिक सुधारों पर चर्चाएँ भी धीरे-धीरे शुरू होने लगी थीं।

कन्नड में हरिदास साहित्य एवं स्त्री परंपरा

कर्नाटक के धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में हरिदास परंपरा एवं साहित्य का स्थान अनोखा है। सामान्य जनमानस में ईश्वर के प्रति आस्था को पुनःस्थापित करने के लिए हरिदासों ने भक्ति को अत्यंत सरल रूप में प्रस्तुत किया। इसके अलावा शास्त्रार्थों के माध्यम से सनातन चिंतन एवं ज्ञान परंपरा को भी सशक्त किया एवं समाज, राष्ट्र को निर्बल बनाने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में भी परिवर्तन का शंखनाद किया। इस प्रकार से, व्यवस्था के भीतर से ही उसकी कमजोरियों को हटाने का प्रयास करते हुए सनातन परंपरा को सशक्त बनाने का महत्तर योगदान दिया।

आज की तरिके में दास परंपरा में लगभग 139 दास हो चुके हैं। यह स्वाभाविक है कि पुरुषों की इस दुनिया में उनमें पुरुषों की संख्या अधिक है। ऐसे में कुछ ऐसी भक्तिनें थीं जिन्होंने इस भौतिक दुनिया में अपने सभी कर्तव्यों का पालन करते हुए, ईश्वरीय भक्ति के मार्ग पर अग्रसर होते हुए, न केवल स्वयं के लिए, मुक्ति की सीढ़ी चढ़ी, वरन अपने जैसी महिलाओं और सभी स्त्रियों को भी आत्माभिव्यक्ति का मार्ग दिखाया।

हरप्पनहळ्ळी भीमव्वा का जीवन

भीमव्वा का जन्म 6 जुलाई, 1823 को नारायण देवर केरे नामक शहर में, नरेभट्टार परिवार के रघुनाथाचार्य और रघम्मा की बेटी के रूप में हुआ था। उनका जन्म नाम कमलाक्षी था। उनके जन्म के कुछ महीनों बाद तक, ऐसा लगता था जैसे उनके शरीर पर चक्र और पैरों में कमल हों। किंवदंती है कि जब भी कोई छोटा बच्चा रोने लगता, अगर वह पालना हिलाती और हरिनाम जपती, तो वह तुरंत शांत हो जाता।

साहित्यिक योगदान : उन्होंने सैकड़ों रचनाएँ की, जिनमें लगभग 143 छोटे कीर्तन और 193 लंबे कीर्तन (कथानकीर्तन) शामिल हैं; ये रचनाएँ अपनी संवादात्मक शैली और वैवाहिक जीवन (मुत्तिदेथाना) तथा भक्ति के विषयों के लिए लोकप्रिय हैं। कहा जाता है कि सपने में उनकी मुलाकात नारद मुनि से हुई जिन्होंने उन्हें साहित्य लिखने की ओर प्रेरित किया। उनकी रचनाएँ महिलाओं के लिए रोज़मर्रा के जीवन के आध्यात्मिक महत्व को उजागर करती हैं। उनके इष्टदेव का अंकित नाम था ''भीमेश कृष्ण।''

व्यक्तित्व

भीमव्वा की स्मरण शक्ति बहुत तेज़ थी। इसीलिए वह अपने मुँह से हज़ारों कीर्तन और सैकडों कहानी-कीर्तन धाराप्रवाह सुनाती थीं। जब वह छह साल की थीं, तो उन्हें भगवान वेदव्यास के दर्शन हुए। तब से उनमें एक बड़ा परिवर्तन देखा गया। जब वह 11 साल की थीं, तो उनकी शादी रायदुर्गा तालुक के हरेसमुद्र गाँव के गोपालप्पा के वंश के मुनियप्पा से हुई। दूल्हे की उम्र 45 साल थी। यह उसका तीसरा विवाह था। विवाह के 14 साल बाद, उन्हें एक बेटा हुआ और चार साल बाद एक बेटी। जब वह 35 साल की थीं, तो उनके पति का देहान्त हो गया। यहीं से उनका जीवन बदल गया।

कहते हैं कि एक दिन, दोपहर में सोते समय, उन्होंने सपना देखा कि वह एक बड़े जंगल में एक पेड़ के नीचे सो रही हैं। तभी एक ऋषि (नारद) डफली लिए एक काले सांप के साथ आए। उन्होंने सांप से अपनी जीभ पर तीन अक्षर लिखने को कहा। जागने पर, भीमव्वा ने पाया कि वह पढ़ और लिख सकती हैं, और उन्हें सभी वेदों और शास्त्रों का गहन ज्ञान प्राप्त हो गया है। इसलिए नारद मुनि को ही उनका दीक्षा-गुरु माना जाता है। उसके बाद ही उन्होंने कीर्तन लिखना शुरू किया।

उन्होंने अनेक पवित्र तीर्थस्थलों और मंदिरों की यात्राएँ की। वे जहाँ कहीं भी गईं, वहाँ उनका अत्यंत आत्मीयता और सम्मान के साथ स्वागत किया गया, क्योंकि लोग उनकी असाधारण आध्यात्मिक आभा और उपस्थिति को सहज ही पहचान लेते थे।

क्रमशः



(आयुर्वेद)

कद्दू के बीज

(Pumpkin Seeds)

- डॉ.सुमा एस.एस.जोशी

कद्दू के बीज (Pumpkin seeds), जिन्हें संस्कृत में कुष्माण्ड बीज कहा जाता है, पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। ये कद्दू फल के अंदर पाए जाने वाले चपटे, हरे बीज हैं, जिनमें प्रोटीन, हेल्दी फैट, जिंक, मैग्नीशियम और एंटीऑक्सीडेंट्स प्रचुर मात्रा में होते हैं।

आयुर्वेद में कुष्माण्ड को बलवर्धक, पौष्टिक और पित्तशामक माना गया है, तथा पौराणिक रूप से इसका संबंध देवी कुष्माण्डा से जोड़ा जाता है। कद्दू और इसके बीजों का उपयोग प्राचीन काल से भारत, चीन और अमेरिका की सभ्यताओं में भोजन व औषधि दोनों रूपों में होता आया है। इसका वैज्ञानिक नाम Cucurbita pepo है, जो Cucurbitaceae कुल का एक बेल (creeper) पौधा है। यह उष्ण एवं उपोष्ण जलवायु में 20°-30°C तापमान पर, अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी में अच्छी तरह उगता है और भारत में व्यापक रूप से पाया जाता है। कद्दू की खेती सरल होती है - बीजों की बुवाई फरवरी से जुलाई के बीच की जाती है, नियमित सिंचाई व देखभाल आवश्यक होती है, और लगभग 90-120 दिनों में फल तैयार हो जाते हैं, जिनसे बीज प्राप्त किए जाते हैं।

कद्दू की प्रमुख किस्में

श्रेणी	उपश्रेणी/किस्म	विवरण
प्रजाति के आधार पर	Cucurbita pepo	छोटे से मध्यम आकार के कद्दू, बीज एवं सब्जी दोनों के लिए उपयोगी
	Cucurbita maxima	बड़े आकार के कद्दू, ठंडे क्षेत्रों में अधिक उगाए जाते हैं
	Cucurbita moschata	गर्म जलवायु में उगनेवाली, स्वाद में मीठी किस्म
	Cucurbita argyrosperma	मुख्यतः बीज उत्पादन के लिए उपयोगी
उपयोग के आधार पर	टेबल पर्पस	सब्जी एवं पकवानों के लिए
	सीड पर्पस	अधिक एवं उच्च गुणवत्ता वाले बीज उत्पादन के लिए
	ऑर्नामेंटल	सजावट के लिए छोटे एवं रंगीन कद्दू
भारत की उन्नत किस्में	पूसा विश्वास, पूसा हाइब्रिड-1, अर्का सूर्य, अंबिली, CO-1&CO-2 (तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित)	
विशेष बीज किस्में	हुललेस (Hull-less)	बीज का कठोर बाहरी आवरण नहीं होता, सीधे खाने एवं प्रोसेसिंग के लिए उपयुक्त

निष्कर्ष

कद्दू की विभिन्न किस्मे उनके आकार, जलवायु अनुकूलता एवं उपयोग के अनुसार चयनित की जाती हैं। बीजों के लिए विशेष रूप से विकसित किस्मे पोषण एवं औषधीय उपयोग की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

कद्दू के बीज पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं और इनमें मुख्यतः प्रोटीन, वसा तथा सूक्ष्म पोषक तत्व पाए जाते हैं। इनमें लगभग 25–30% प्रोटीन और 40–50% स्वस्थ वसा (विशेष रूप से ओमेगा-6 एवं ओमेगा-3 फैटी एसिड) उपस्थित होते हैं। इसके अतिरिक्त ये मैग्नीशियम, जिंक, आयरन, फॉस्फोरस और पोटैशियम जैसे खनिजों के अच्छे स्रोत हैं।

इनमें फाइबर भी पर्याप्त मात्रा में होता है, जो पाचन के लिए लाभकारी है। कद्दू के बीजों में विटामिन-E तथा अन्य एंटीऑक्सीडेट्स भी पाए जाते हैं, जो शरीर को फ्री रेडिकल्स से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

आयुर्वेदिक गुणधर्म

कद्दू के बीज आयुर्वेद के अनुसार मधुर एवं तिक्त रस वाले होते हैं, जिनमें गुरु और स्निग्ध गुण पाए जाते हैं। इनका वीर्य शीत तथा विपाक मधुर होता है। ये मुख्यतः वात और पित्त दोष को शांत करने वाले माने जाते हैं, जबकि अधिक मात्रा में सेवन करने पर कफ दोष की वृद्धि की संभावना रहती है।

इन गुणधर्मों के आधार पर कद्दू के बीज एक शीतल, पोषक और बलवर्धक द्रव्य के रूप में कार्य करते हैं, जो शरीर की धातुओं का पोषण करते हैं तथा समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक होते हैं। उचित मात्रा में सेवन करने पर ये अत्यंत लाभकारी सिद्ध होते हैं।

प्रसंस्करण एवं भंडारण (Processing & Storage)

कद्दू के पके हुए फल से बीजों को निकालकर सबसे पहले साफ पानी से धो लिया जाता है ताकि गूदा पूरी तरह हट जाए। इसके बाद बीजों को छाया में या हल्की धूप में अच्छी तरह सुखाया जाता है, जिससे उनकी नमी पूरी तरह समाप्त हो जाए।

सूखने के बाद इन्हें हल्का भूनकर या कच्चे रूप में उपयोग किया जा सकता है।

भंडारण के लिए बीजों को ठंडी, सूखी और अंधेरी जगह पर वायुरुद्ध (airtight) डिब्बे में रखना चाहिए। नमी और हवा के संपर्क से बीज खराब हो सकते हैं या उनमें दुर्गंध आ सकती है।

लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए इन्हें रेफ्रिजरेटर में भी रखा जा सकता है, जिससे उनकी गुणवत्ता और पोषक तत्व लंबे समय तक बने रहते हैं।

मात्रा (Dosage)

कद्दू के बीजों का सेवन सामान्यतः 10–20 ग्राम प्रतिदिन (लगभग 1–2 टेबलस्पून) करना उपयुक्त माना जाता है।

सामान्य स्वास्थ्य हेतु : 10–15 ग्राम प्रतिदिन।

पोषण या विशेष लाभ के लिए : 15–20 ग्राम प्रतिदिन।

बच्चों के लिए : 5-10 ग्राम (आयु के अनुसार)।

इन्हें भूनकर, पाउडर बनाकर या सलाद/दूध के साथ लिया जा सकता है।

अधिक मात्रा में सेवन करने से अपच या भारीपन हो सकता है, इसलिए संतुलित मात्रा में ही उपयोग करना चाहिए।

क्रमशः



जून महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र



मेष राशि - स्वस्थ्य काय, घरेलू-पारिवारिक सुख, बन्धु-मित्रजनों से वैमनस्तता के कारण मानसिक कष्ट, अनेकानेक क्षेत्रों से धनलाभ, सन्तान सुख, स्त्रीकष्ट, दाम्पत्य जीवन में कुछ खट्टापन, कार्यक्षेत्रों में बाधा। अपनों का असहयोग, आमदनी से अधिक खर्च, छात्रों के लिए परिश्रम कि आवश्यकता, भाग्ययोग प्रबल है।



वृषभ राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा, सेहत मध्यम रहेगा, बन्धुजनों का सामान्य सहयोग। धन कि चिन्ता करने से मन अशान्त रहेगा। रुके हुए कार्यों में सफलता, अपने वाणी को समुचित प्रयोग करे जिससे काम बनता रहेगा, उच्चाधिकारियों से वैमनसता। धर्मकार्यों में अभिरुचि एवं धनखर्च।



मिथुन राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा, स्वस्थ शरीर, धनलाभ, भाग्यवृद्धि, अपनों का सहयोग, मातृसुख। इष्टमित्रों से लाभ, पूर्वकार्यों का लाभ, अनेक प्रकार के कार्यों में संलग्नता जिससे धनागम बना रहेगा। कार्यक्षेत्रों में उत्तरोत्तर वृद्धि, दाम्पत्यजीवन उल्लास पूर्ण रहेगा, भाग्य प्रबल है। भूमि-जायदाद लाभ, अविवाहित के लिए विवाहयोग बन रहा है।



कर्कटक राशि - उत्तम कार्य, वृथा चिन्तन से मानसिक कष्ट, धनलाभ। अपनों का पूर्ण सहयोग, मातृसुख, मित्रजनों से मदद, पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति। आर्थिक कष्ट झेलना पर सकता है। सट्टे बाजी-लेन देन कारोबार में धन लगाने से वापस नहीं प्राप्त होंगे। पतिसुख, दाम्पत्यसुख, कार्यक्षेत्रों में प्रगति।



सिंह राशि - शारीरिक परेशानि, सेहत मध्यम, पित्तरोग, धन-सम्पत्ति लाभ, कारोबारी क्षेत्रों में प्रगति। अपने इष्टमित्रों का सहयोग, मित्रलाभ, पुत्रलाभ, संततिसुख, धर्मकार्य सम्पादन, यत्र तत्र यात्रा। भाग्योदय, कभी-कभी स्वभाव में उग्रता, दाम्पत्य जीवन में कटुता, पारिवारिक उत्तरदायित्व के कारण मन खिन्न रहेगा।



कन्या राशि - यह माह आपके लिए उत्तमसिद्ध होगा, उत्तम कार्य, शारीरिक सुख, पारिवारिक सुख, अन्न-धन कि प्राप्ति। अपनों का भरपूर सहयोग, चारों ओर से धन प्राप्ति, घरेलू मतभेद होने के कारण मानसिक कष्ट। पत्नी से मनमुटाव, कार्यक्षेत्रों में प्रगति, आय के अनेक मार्ग प्रशस्त होंगे। धर्मकार्यों में रुचि।



तुला राशि - स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, अनेक श्रोतों से धनलाभ होगा परन्तु धनहानि होगा अतः सोच समझकर धनव्यय करे। अपने बन्धुजनों का सहयोग, पारिवारिक सुख, सन्तान के भाग्य कि चिन्ता के कारण मानसिक कष्ट एवं अप्रसन्नता। किसी कार्यों को करने से पहले योजना बना ले वरना कार्यों में असफलता।



वृश्चिक राशि - स्वस्थ शरीर, उत्तम भोजन प्राप्ति, धन-सम्पतिलाभ, शत्रुपक्ष कमजोर। मातृकष्ट, पारिवारिक सुख सौहार्द पूर्ण, मित्र-बन्धु-बान्धवों का मेलमिलाप एवं सहयोग, भाग्य में रुकावट होने के कारण अर्चन पैदा होगा। स्त्री-पतिसुख, शीतरोग से कष्ट, कार्यक्षेत्रों में प्रगति, भूमि-जायदाद, वाहन प्राप्ति।



धनुष राशि - शारीरिक-मानसिक कष्ट, खानपान कि अनिश्चितता के कारण उदर वेदना एवं परेशानी। परिवार-बन्धुजनों से सुख, मातृ-पितृकष्ट, सन्तानसुख, दाम्पत्यजीवन में कुछ परेशानी होगी, पत्नी से मनमुटाव, बच्चे कि चिन्ता करने के कारण मन खिन्न रहेगा। छात्रों के लिए परिश्रम करने के उपरान्त सफलता, पुराणे मित्रों से मिलन सम्भव है।



मकर राशि - यह मास आपके लिए उत्तम सिद्ध होगा, उत्तम स्वास्थ, धनलाभ, अपनों का पूर्ण सहयोग। सन्तान सुख, दाम्पत्यसुख, आमदनी से अधिक खर्च, पारिवारिक मतभेद, अपने बन्धुजनों के व्यवहार से मानसिक चिन्ता। मित्रों का सहयोग, योजना सफल, शत्रुपक्ष कमजोर बना रहेगा, घरेलु झंझट, रोगभय, कारोबार क्षेत्रों में उन्नति।



कुंभ राशि - शारीरिक दुर्बलता, मानसिक कष्ट, उदर विकार, नेत्र वेदना, सिरदर्द, आमदनी से अधिक धन खर्च। धनहानि, घरेलु क्लेश, अपनों का दुर्व्यवहार होने से कष्ट, गृहस्थजीवन में मनमुटाव, सन्तान पक्ष कि चिन्ता। धैर्यबल बना रहेगा, दाम्पत्य जीवन कटु-तिक्त कि स्थिति बनी रहेगी।



मीन राशि - यह मास आपके लिए मध्यमफलदायक रहेगा। शारीरिक कष्ट, शिरोव्यथा, धार्मिककार्यों का सम्पादन, अपनों का सहयोग, इष्टमित्रों का आवागमन एवं सहयोग, सामाजिक कार्यों में संलग्नता, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि। भाग्य प्रबल है, कार्यक्षेत्रों में प्रगति, मातृ-पितृसुख सामान्य रहेगा, सट्टे कारोबार में धन का प्रयोग न करे, भूमि-जायदाद कार्यों में समय अधिक व्यतीत होंगे।

(नीतिकथा)

सच्चा विजेता

- श्रीमती प्रेमा

उस प्राचीन गुरुकुल में शांति छाई हुई थी। गुरु की वृद्धावस्था एक योग्य प्रधान शिष्य की खोज में थी। कई कठिन परीक्षाओं के बाद, बुद्धिमत्ता और अनुशासन से परिपूर्ण तीन शिष्यों का चयन अंतिम दौर के लिए हुआ। वे थे सुमित, विक्रम और सृजन।

एक दिन सुबह, गुरु उन्हें नदी के तट पर ले गए। वहाँ एक ही आकार के तीन खुरदुरे पत्थर रखे हुए थे। गुरु ने उनकी आँखों में देखते हुए शांति से कहा, ''शिष्यों, तुम्हारे सामने ये पत्थर प्रकृति का उपहार हैं। मेरा आदेश यह है, यह पत्थर अब पत्थर के रूप में नहीं दिखना चाहिए। जो तुम में से इस कार्य को सर्वोत्तम ढंग से करेगा, वही प्रधान शिष्य चुना जाएगा।''

तीनों शिष्य सोच में डूब गए। सुमित कर्मठ था। उसने सोचा, ''पत्थर न दिखे, इसके लिए उसे छिपा देना चाहिए।'' उसने एक बड़ा फावड़ा लिया और वहीं आदमी के कद के बराबर एक गहरा गड्ढा खोदा। पसीने से तर-बतर होकर उसने उस पत्थर को गड्ढे में ढकेल दिया और ऊपर से मिट्टी डालकर जमीन बराबर कर दी। उसने गर्व से कहा, ''गुरुदेव! देखिए, पत्थर कहाँ था, इसका पता भी नहीं चल रहा है। मेरा कार्य पूर्ण हुआ!''

विक्रम अत्यंत बलवान था। उसने सोचा, ''अगर छिपा दिया तो कोई उसे खोदकर निकाल भी सकता है। पत्थर के अस्तित्व को ही मिटा देना चाहिए।'' वह एक भारी हथौड़ा लेकर आया और पत्थर पर प्रहार करने लगा। घंटों के संघर्ष के बाद उसने उस विशाल पत्थर को छोटे-छोटे टुकड़ों और धूल में बदल दिया। वह हंसते हुए बोला, ''गुरुदेव! अब इस पृथ्वी पर कहीं भी इस पत्थर का अंश नहीं मिलेगा। इसका रूप पूरी तरह नष्ट हो चुका है।''

तीसरा शिष्य सृजन शांत खड़ा था। उसके हाथ में न तो फावड़ा था और न ही भारी घन। उसके पास केवल एक छोटी छेनी और हथौड़ी थी। उसने पत्थर को कोमलता से छुआ और उसके भीतर एक छिपे हुए रूप को महसूस किया। धीरे-धीरे उसने छेनी से तराशना शुरू किया। व्यर्थ पत्थर के टुकड़े एक-एक कर गिरने लगे। उसकी आँखें पत्थर को नहीं, बल्कि उसमें छिपी एक दिव्य प्रतिमा को देख रही थीं। कुछ दिन बीत गए।

परीक्षा के समापन का दिन आया।

गुरु पहले सुमित के पास गए और बोले, ''तुमने पत्थर को मिट्टी के नीचे गाड़ दिया। वह केवल छिपाया गया है, पर अब भी वह एक पत्थर ही है। यह डर या आलस्य का प्रतीक है।''



फिर वे विक्रम के पास गए और कहा, ''तुमने पत्थर को चूर्ण बनाकर नष्ट कर दिया। किसी भी चीज को नष्ट करना सरल है, पर यह केवल एक हिंसक कार्य है। इससे संसार का कोई लाभ नहीं हुआ।''

अंत में वे सृजन के पास पहुँचे। वहाँ पत्थर के स्थान पर करुणा और गरिमा से ओत-प्रोत एक सुंदर प्रतिमा खड़ी थी। उसे देखने वाले किसी भी व्यक्ति को वह 'पत्थर' नहीं, बल्कि एक 'देवता' या 'कलाकृति' जान पड़ती थी।

गुरु के मुख पर मुस्कान खिल उठी। उन्होंने शिष्यों से कहा, ''सब देखो, सृजन ने वही किया जो अपेक्षित था। उसने पत्थर को न तो छिपाया और न ही नष्ट किया। इसके विपरीत, उसने उसकी आत्मा को उजागर किया और उसे एक नया आयाम दिया। पुराना 'पत्थर' आज लुप्त हो गया है, पर एक नई 'कला' का जन्म हुआ है। नष्ट करने वाला कायर है; छिपाने वाला साधारण मनुष्य है; पर परिवर्तन लाकर सृजन करने वाला ही महान है।''

उस दिन से शिल्पी गुरु का प्रधान शिष्य बन गया।

नीति : समस्याओं को छिपाना या उनसे घृणा कर उन्हें नष्ट करना समाधान नहीं है। समस्याओं को सुंदर अवसरों में बदलने वाला ही सच्चा विजेता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

ताल्लपाका श्री चेन्नकेशवस्वामीजी, श्री सिद्धेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

(दि. 24-07-2026 से दि. 02-08-2026 तक)

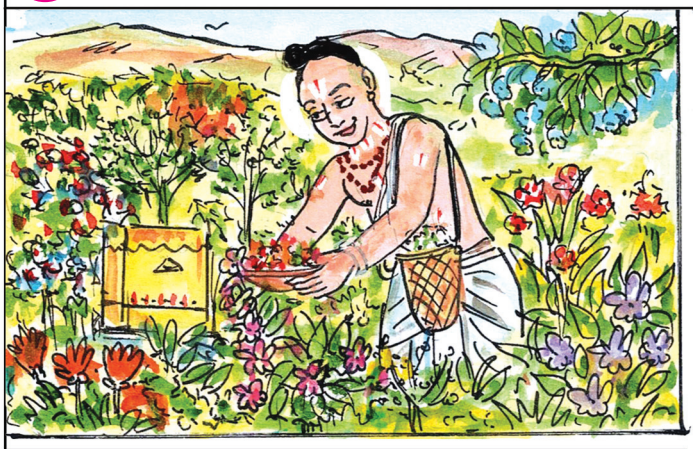
दिनांक	वार	दिन	रात
24-07-2026	शुक्र	---	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
25-07-2026	शनि	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
26-07-2026	रवि	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
27-07-2026	सोम	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
28-07-2026	मंगल	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
29-07-2026	बुध	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुड़वाहन
30-07-2026	गुरु	हनुमन्तवाहन, सा. वसंतोत्सव	गजवाहन
31-07-2026	शुक्र	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
01-08-2026	शनि	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
02-08-2026	रवि	चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

चित्रकथा

परमपुरुष के लिए मंगलकामना गाने वाले

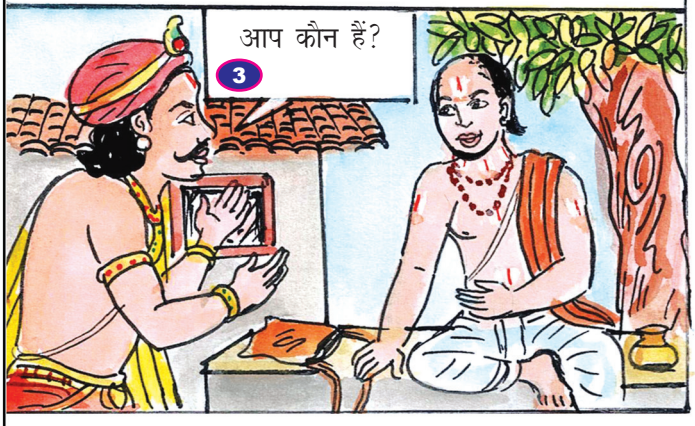
तमिल मूल - श्री वी.ओ.सुरेश
अनुवादक - श्री के.रामनाथन
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

1 बहुत समय पहले श्रीविल्लीपुत्तुर में रहने वाले विष्णुचित्त ने एक फूलों का बगीचा बनाया और वहाँ विराजमान भगवान वटपत्रशायी के लिए मालाएँ बनाकर पुष्प सेवा करते थे।



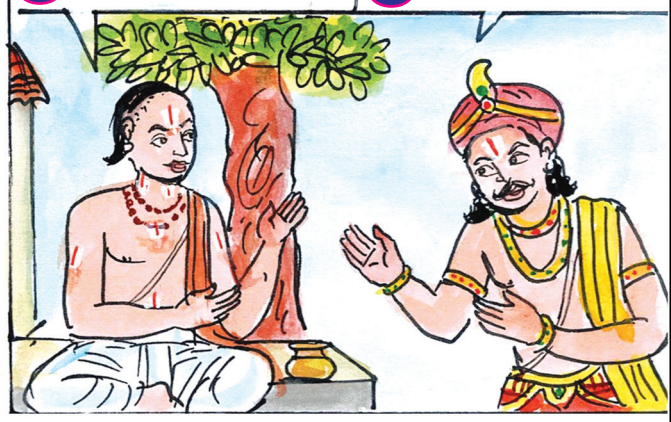


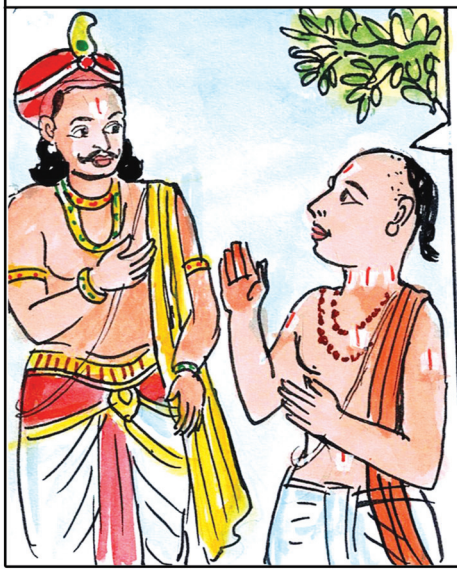
2 एक रात पांड्य राजा वल्लभदेव जब नगर भ्रमण कर रहे थे, तब उन्होंने एक बरामदे पर सो रहे एक वृद्ध को जगाकर...



4 मैं एक ब्राह्मण हूँ। मैं गंगा में स्नान करके लौट रहा हूँ।

5 आपको जो धर्म नीति ज्ञात है, वह मुझे बताएँ।





6 हे राजन्! वर्षा ऋतु की आवश्यकता को साल के अन्य 8 महीनों में, रात की आवश्यकता को दिन में, बुढ़ापे की आवश्यकता को युवावस्था में और परलोक की आवश्यकता को इसी जन्म में कर लेनी चाहिए।

7 अगले दिन राजा ने अपने कुल गुरु सेल्व नम्बी को रात में हुई सारी घटना बताई और...

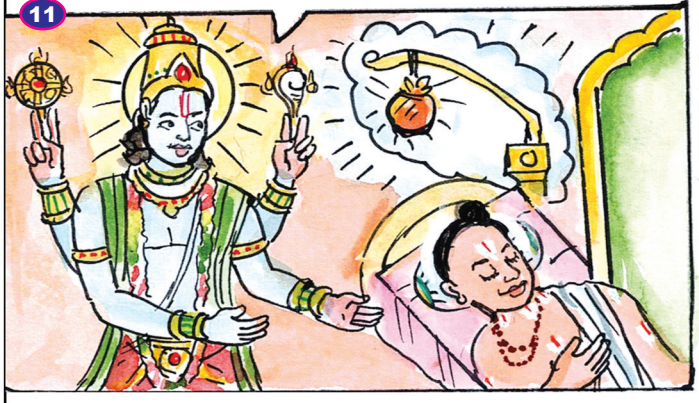
8 गुरुदेव! परलोक पाने का मार्ग क्या है?

9 हे राजन्! हम विद्वानों के सामने यह प्रश्न रखेंगे और जो इसका सही उत्तर देगा, उसे पुरस्कृत करेंगे।



10 राजा ने एक तोरण पर स्वर्ण मुद्राओं की एक पोटली बांधी और विद्वानों को एकत्रित होने का आदेश दिया। उस रात विष्णुचित्त के स्वप्न में भगवान प्रकट हुए और कहा...

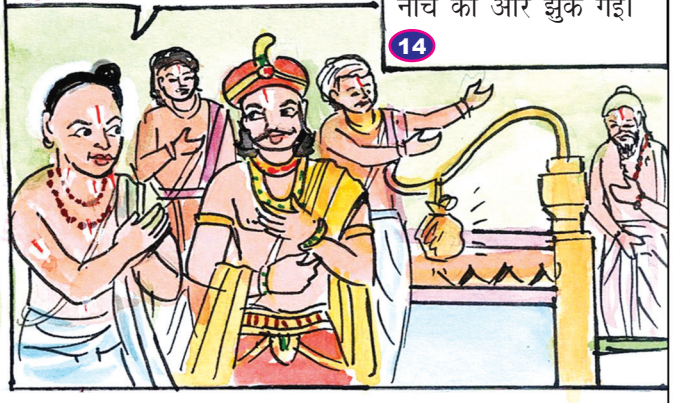
11 मदुरै जाकर उस स्वर्ण मुद्रा की पोटली को प्राप्त कर ले आओ।



12 अगले दिन विष्णुचित्त भी मदुरै गए और राजा के सम्मुख...

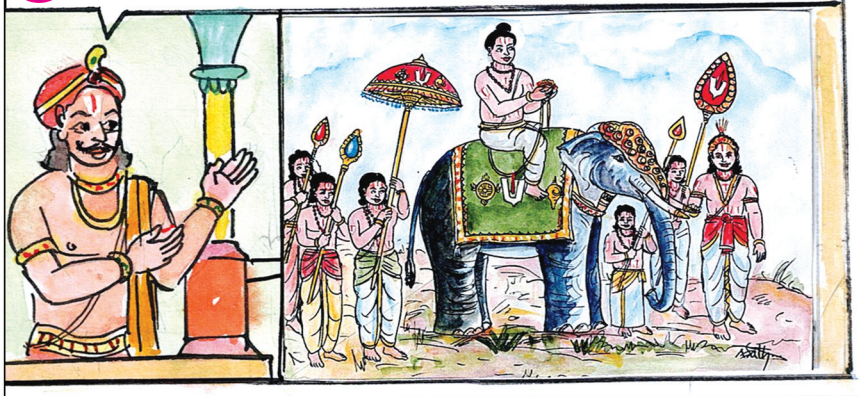
13 मोक्ष का मार्ग केवल श्रीमन्नारायण ही हैं।

14 वह स्वर्ण मुद्रा की पोटली भी कटने के लिए स्वयं नीचे की ओर झुक गई।



15 तुरंत राजा ने उन्हें भट्टारपिरान की उपाधि से सम्मानित किया और कहा...

16 इन्हें हाथी पर बैठाकर पूरे नगर का भ्रमण कराओ।



17 तब अपने भक्त को देखने के लिए स्वयं श्रीमन्नारायण, देवी लक्ष्मी के साथ गरुड़ पर सवार होकर शंख और चक्र धारण किए हुए प्रकट हुए।



18 भगवान के दर्शन पाकर विष्णुचित्त को यह चिंता होने लगी कि कहीं भगवान को 'बुरी नज़र' न लग जाए, इसलिए वे उनकी मंगलकामना करने लगे।

19 आप हज़ारों-हज़ार वर्षों तक दीर्घायु हों।

20 अब से आप पेरियाल्वार के नाम से पूजे जाएंगे।



21 पेरियाल्वार ने भी परमात्मा की वंदना की और भगवान कृष्ण की लीलाओं एवं उनके दिव्य गुणों को प्रबंधम के रूप में रचा।



तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।



प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।

2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।

3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।

4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।

5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।

6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।

7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।

8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।

9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।

10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।

11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम.....

लिंग/आयु....., चंदा नंबर.....

पता.....

.....

मोबाइल नं.....

क्विज-47

1) तोंडमान ने किससे युद्ध किया?

ज).....

2) श्री वेंकटेश्वर स्वामी अपना विश्वरूप दर्शन किस राजा को दिया था?

ज).....

3) मीराबाई ने किस भगवान जी को आराधन किया?

ज).....

4) श्रीराम का पिताजी का नाम क्या है?

ज).....

5) कौशल्या पुत्र का नाम क्या है?

ज).....

6) सीता देवी को किसने अपहरण किया?

ज).....

7) त्रिवेणीसंगम में कौनसा नदिया बहाति है?

ज).....

8) यमुना नदी का उद्गम स्थल कहा है?

ज).....

9) यमुना का पिताजी का नाम क्या है?

ज).....

10) पेरियाल्वार का जन्म-नक्षत्र क्या है?

ज).....

11) कार्वेटिनगर में विराजित भगवान का नाम क्या है?

ज).....

12) कार्वेटिनगर का किस-किस राजाओं ने शासन किया?

ज).....

13) आकाशराज के भाई का नाम क्या है?

ज).....

14) वकुला माता के पुत्र का नाम क्या है?

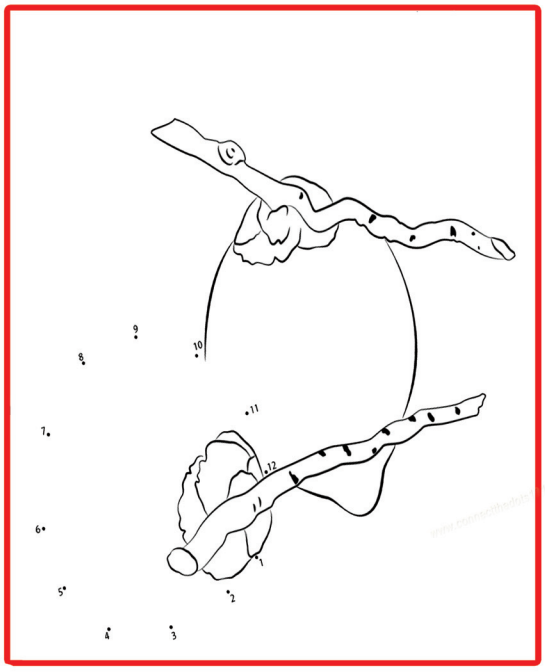
ज).....

15) विवाह अनंतर पद्मावती-श्रीनिवास ने किस ऋषि के आश्रम में रहा था?

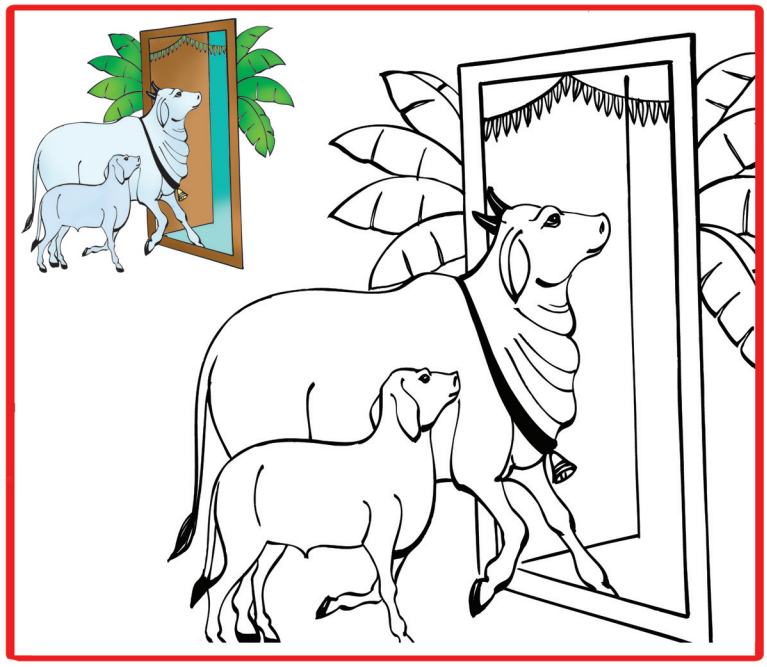
ज).....



बिंदी को जोड़िए



रंगों को भरिये क्या!



संक्षिप्त रूप में नवरसों का विवरण

1) शृंगार
प्रेम/सौंदर्य



2) हास्य
हँसी/कॉमेडी



3) करुणा
दया/उदासी



4) रौद्र
गुस्सा



5) वीर
साहस/वीरता



6) भयानक
डर



7) भीभत्स
आश्चर्य



8) अद्भुत
विस्मय/आश्चर्य



9) शांत
शांति



तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)



चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
   ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)



धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC



तिरुपति, श्री गोविंदराजस्वामीजी का पुष्पयाग महोत्सव

22-06-2026

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-05-2026 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.



तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का प्लवोत्सव

25-06-2026 से 29-06-2026 तक